PKL NO.KKR/184/2022-24
हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र
सच्ची व स्टीक खबर , आप तक
सम्पादक : जरनैल सिंह
छायाकार : राजरानी

गजब हरियाणा

Contact : 91382-03233
समस्त भारत में एक साथ प्रसारित
HAR/HIN/2018/77311
WWW.GAJABHARYANA.COM ✸ 16 जुलाई 2023 वर्ष : 6, अंक : 08 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✸ email. gajabharyananews@gmail.com

ज्ञान विचार

अशिक्षित रहने से पैदा न होना ही अच्छा है, क्योंकि अज्ञान सब बुराइयों की जड़ हैं : नेपोलियन

प्रेरणास्त्रोत: डॉ. कृपा राम पुनिया IAS(Retd.), पूर्व उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार

मार्गदर्शक: डॉ. राज रूप फुलिया, IAS (Retd), पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा वाइस चांसलर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार एवं चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी, सिरसा

सम्मान

गजब हरियाणा समाचार पत्र के पांच वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम के 1 जुलाई 2023 के विशेषांक का विमोचन करते हुए हरियाणा सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ राजशेखर वुंदरु, पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा सरकार डॉ राजरुप फुलिया, सूरजभान नरवाल प्रधान गुरु रविदास मंदिर एवं धर्मशाला कुरूक्षेत्र, डॉ कर्मवीर चंडीगढ़ और गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

गजब हरियाणा समाचार पत्र के पांच वर्ष पूर्ण होने पर : 'विशेष समाज सेवा सम्मान –2023' से वरिष्ट पत्रकार और गजब हरियाणा के विशेष सहयोगी नरेन्द्र धूमसी को सम्मानित करते गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

धर्मपाल मथाना, पूर्व महासचिव एवं सचिव पिपली अनाजमंडी आढती एसोसिएशन को गजब हरियाणा समाचार पत्र के पांच वर्ष पूर्ण होने पर 'विशेष समाज सेवा सम्मान –2023' से सम्मानित करते गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

पिपली अनाजमंडी आढती एसोसिएशन के पूर्व महासचिव एवं सचिव धर्मपाल मथाना गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा को टेलीफोन डायरेक्टरी भेंट करते हुए।

हरियाणा सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ राजशेखर वुंदरु, पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा सरकार डॉ राजरुप फुलिया जरनैल सिंह रंगा की पत्नि राजरानी और मामी ऊर्मिला देवी को भारतीय संविधान की प्रस्तावना देकर सम्मानित करते हुए।

गजब हरियाणा समाचार पत्र के पांच वर्ष पूर्ण होने पर गुरु रविदास मंदिर एवं धर्मशाला सभा की शासकीय कमेटी की सदस्य जोगिंद्रो देवी मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

छात्र लक्ष्य निर्धारित कर, कर सकते हैं कोई भी मुकाम हासिल: राजशेखर वुन्दरू

आधुनिकता के दौर में अभिभावक अपने बच्चों को बनाएं हाइटेक

प्रतिभाशाली छात्रों को आगे बढाने के लिए मिशन के रूप में लिया है ऐसे कार्यक्रमों को : डॉ. राजरूप फुलिया

प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रदेश के 10वी, 12वीं व टॉपर 350 छात्रों को किया गया सम्मानित

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । प्रदेश के अतिरिक्त मुख्य सचिव राजशेखर वुन्दरू ने कहा है कि छात्र लक्ष्य निर्धारित कर मुश्किलों को पार कर कोई भी मुकाम हासिल कर सकते हैं। शिक्षा एक ऐसा हथियार है, जिसके बलबूते पर छात्र ऊंचाइयों को छू सकते हैं। आज जरूरत है बच्चों को हाइटेक बनाने की, क्योंकि आधुनिकता के दौर में इंटरनेट व मोबाइल का बोलबाला है। ऐसे में अभिभावक अपने बच्चों को हाइटेक बनाने के लिए आगे आएं, ताकि बच्चे अपना लक्ष्य हासिल कर सकें। वे सेवानिवृत अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. राजरूप फुलिया, आईएएस द्वारा श्री गुरु रविदास मंदिर एवं धर्मशाला में राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने डॉ. अंबेडकर और श्री गुरु रविदास को प्रेरणा स्त्रोत बताते हुए कहा कि बच्चे महापुरुषों के आदर्शों से प्रेरणा लेकर आगे बढ सकते हैं। उन्होंने कार्यक्रम में शिरकत कर रहे छात्रों के अंदर आत्मविश्वास भरते हुए कहा कि दुनिया तेजी से बदल रही है। इस तेजी में शामिल होने के लिए हमें अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा करना होगा, तभी हम अपना लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

प्रतिभाशाली छात्रों को आगे बढने के लिए चलाया मिशन : डॉ. राजरूप फुलिया

सेवानिवृत्त अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. राजरूप फुलिया ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने प्रदेश के प्रतिभाशाली छात्रों को आगे बढने के लिए मिशन चलाया है। इस मिशन के तहत वे छात्रों के अंदर ऊर्जा भरने के साथ साथ उनमें निखार लाने का काम कर रहे हैं, क्योंकि आज का युग ऑनलाइन व टैक्नालोजी का है। शिक्षा के स्तर को उठाने के लिए आज के युग के अनुसार बदलाव की जरूरत है और वे इस मुहिम में लगे हुए हैं। पिछले वर्ष उन्होंने प्रतिभाशाली छात्रों के लिए मुहिम शुरू की थी और इस मुहिम के तहत उनका मुख्य उद्देश्य प्रतिभाशाली छात्रों को आगे बढने के लिए प्रोत्साहन देना है।

सम्मान समारोह एक नेक कदम : डॉ फकीर चंद

कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी फिजिक्स विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. फकीर चंद ने कहा की आज का यह सम्मान समारोह एक नेक कदम है, क्योंकि जब कोई अपनी जिंदगी मे प्रतिभा का प्रदर्शन करता है और अगर हम उसको प्रोत्साहित करते है तो वह व्यक्ति बहुत उत्साहित होता है और समाज में अपनी छाप छोड़ता है। वह समाज के लिए रचनात्मक कार्य करता है। मै प्रोग्राम के आयोजक को बधाई देता हूं कि उन्होंने इस बारे मे सोचा और समाज के प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित करने का काम किया।

प्रतिभाशाली सम्मान समारोह में 10वीं 12वीं को सम्मानित किया गया : डॉ रणजीत फुलिया

शिक्षाविद डॉ. रणजीत फुलिया ने बताया कि प्रतिभाशाली सम्मान समारोह में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के 12वीं कक्षा की परीक्षा में 1से 20 तक रैंक वाले लगभग 27 विद्यार्थी, कक्षा दसवीं के रैंक 1 से 20 तक के सभी वर्ग के लगभग 22 विद्यार्थी, कक्षा दसवीं के एससी वर्ग के प्रदेश के सभी जिलों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले 71 विद्यार्थी और जिले के एससी वर्ग के विद्यार्थी, जिन्होंने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 220 विद्यार्थियों सहित पूरे हरियाणा से 350 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया है।

उन्होंने बताया की गत वर्ष भी करीब 500 प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया गया था। जिसमे हरियाणा शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ महावीर सिंह ने सम्मान समारोह में उपस्थित होकर छात्रों को प्रेरित किया था।

इससे पूर्व प्रदेश के अतिरिक्त मुख्य सचिव राजशेखर वुन्दरू, डॉ. राजरूप फुलिया, डॉ फकीर चंद व अन्य अतिथियों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर समारोह की शुरूआत की। श्री गुरु रविदास मंदिर एवं धर्मशाला सभा के प्रधान सूरजभान नरवाल ने मुख्यातिथि व अन्य अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रिंसिपल जगदीश व राजकुमार ने किया। डॉ. राजरूप फुलिया ने मुख्यातिथि व अन्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

इस मौके पर प्रदेश भर से आए छात्रों के अभिभावक, कुवि के चेयरमैन प्रो फकीर चंद, डॉ. कर्मबीर, सेवानिवृत्त तहसीलदार जयवीर रंगा, विजिलेंस कमेटी के मेंबर कश्मीर तंवर, मंदिर कमेटी कार्यकारिणी के सदस्य नरेश रंगा, सहित अन्य मौजूद रहे।

'गजब हरियाणा' में विवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें : 91382-03233

सेहत अपनी तो चिंता भी खुद की

तकरीबन सभी फास्ट फूड निर्माण करने वाली कंपनियों के उत्पाद स्वास्थ्य के लिहाज से तय मानकों की कसौटी पर खरा नहीं उतर रहे हैं। 1972 में फास्ट फूड की शुरुआत हुई तो उद्देश्य यह था कि लोगों को ज्यादा कैलोरी हासिल हो। लेकिन उन्होंने धन खूब कमाया, मगर लोगों के स्वास्थ्य की फिक्र नहीं की मगर अब हमें अपनी सेहत की चिंता करनी होगी।

नीति आयोग के विशेषज्ञों का यह खुलासा चिंतित करने वाला है कि पिछले तीन साल में फास्ट फूड में गैर सेहतमंद तत्वों की मात्रा में 226 प्रतिशत इजाफा हुआ है जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ये खाद्य पदार्थ पहले से ही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थे और अब इन तत्वों की मात्रा में दोगुना इजाफा स्वास्थ्य के लिए घातक साबित हो सकता है। उल्लेखनीय है कि शोधकर्ताओं ने यह नतीजा फास्ट फूड के 1787 मेन, साइट्स और डेजर्ट खाद्य पदार्थों पर अध्ययन के उपरांत निकाला है। अध्ययन में सामने आया है कि कई फास्ट फूड कंपनियां अपने फायदे के लिए सलाद और अन्य स्वास्थ्यवर्धक चीजों के जरिए ग्राहकों को खूब लुभाने की कोशिश कर रही है।

शोधकर्ताओं का मानना है कि 1986 से 2016 के बीच इन फास्ट फूड चेन में मेनकोर्स व्यंजन का औसत आकार 39 ग्राम और कैलोरी 90 तक बढ़ी है। साइड कोर्स की बात करें तो आकार में ये चार ग्राम बढ़े हैं जिससे 175 से 217 तक कैलोरी में इजाफा हुआ है। इन फास्ट फूड चेन पर मिलने वाली मिठाइयों (डेजर्ट) का वजन 71 ग्राम और कैलोरी 186 तक बढ़ा है। 1985 की तुलना में अब वनज और प्रति प्लेट कैलोरी और प्रोटीन की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिसके बदले में गैर स्वास्थ्यकर आदतों और जीवन शैली में नकारात्मक बदलाव आया है। गौर करें तो भारत में भी फास्ट फूड सेवन का प्रचलन तेजी से बढ़ा है और उसी का नतीजा है कि मोटापा बढ़ रहा है।

शोधकर्ताओं का मानना है कि 2025 तक भारत में 1.7 करोड़ बच्चे मोटापे से ग्रस्त होंगे और 184 देशों की सूची में भारत दूसरे पायदान पर होगा। मौजूदा समय में चीन में 1.53 करोड़ बच्चे मोटापे संबंधी बीमारी के शिकार हैं। बीते एक दशक में भारत में मोटापे से ग्रस्त लोगों की संख्या दोगुनी हुई है। दुनिया में सर्वाधिक अमेरिका में 7.94 करोड़ वयस्क मोटापे से ग्रस्त हैं। चीन दूसरे नंबर पर है जहां 5.73 करोड़ लोग मोटापे से ग्रस्त हैं। वहीं अध्ययनों में पाया गया है कि शीतल पेय में 200, पिज्जा में 300, केक में 120 और बर्गर में 200 कैलोरी होती है जो मोटापा बढ़ाने के लिए पर्याप्त है। एसोचैम और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी रिपोर्टों में कहा जा चुका है कि मोटापे का प्रमुख कारण फास्ट फूड का सेवन है। देखा भी जा रहा है कि बच्चे घर पर निर्मित गुणवत्तापरक भोजन के बजाए पास्ता, मैक्रोनी, चाउमीन, नूडल्स और बर्गर, मैगी, मोमोज पर जोर दे रहे हैं। चिकित्सकों का कहना है कि इनका ज्यादा सेवन करने से रक्तचाप, मधुमेह, हड्डियों में कमजोरी, तथा मोटापा इत्यादि की संभावना प्रबल हो जाती है। देश में जहां पहले मधुमेह की बीमारी बुजुर्गों को हुआ करती थी अब उसकी जद में बच्चे भी आने लगे हैं।

कई तरह के सर्वे में पाया गया है कि जो बच्चे फास्ट फूड का अधिक सेवन करते हैं उनमें मधुमेह बीमारी होने का खतरा अधिक रहता है। चूंकि, हर तरह के फास्ट फूड के निर्माण में चीनी का इस्तेमाल किया जाता है लिहाजा अधिक सेवन करने वाले लोगों के दांत खराब होने की संभावना बढ़ जाती है। उच्च चीनी सामग्री से बनने वाली चीजें मसलन सोडा, कैंडी और बेक के इस्तेमाल से मुंह संबंधी कई बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। चिकित्सकों का मानना है कि चूंकि आलू के चिप्स, फ्रेंच फ्राइज, जैसे फास्ट फूड में सोडियम की मात्रा अधिक रहती है जो कि रक्तचाप और स्ट्रोक की संभावना को बढ़ा देती है। चिकित्सकों का कहना है कि हर 500 मिलीग्राम सोडियम का सेवन करने से स्ट्रोक का सेवन करने से 17 प्रतिशत बढ़ जाता है। शरीर को सेहतमंद रखने के लिए विटामिन्स की जरूरत पड़ती है। इससे शरीर का समग्र विकास होता है। लेकिन गौर करें तो फास्ट फूड में विटामिन्स और खनिज की मात्रा न के बराबर होती है। लिहाजा अधिक फास्ट फूड सेवन करने वाले विटामिन न मिलने के कारण कई किस्म की गंभीर बीमारियों का सामना करते हैं। इसके अलावा दुनिया भर में कोका कोक और पेप्सी जैसे पीने वाले उत्पादों का भी सेवन होता है। जबकि तथ्य है कि ये उत्पाद हमारे शरीर के अंदर के अंगों को क्षतिग्रस्त करते हैं।

जुलाई 2006 में सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट की एक रिपोर्ट में कोकाकोला और पेप्सी के पेयों में कीटनाशकों की अधिक मात्रा होने की बात सामने आयी थी। सीएसई द्वारा जारी रिपोर्ट में कोका कोला और पेप्सी के 11 विभिन्न ब्रांडों में कीटनाशकों की उपस्थिति 2003 में पाएग गए कीटनाशकों से भी ज्यादा बताई गई थी। कोकाकोला को कोलकाता संयंत्र द्वारा उत्पादित एक पेय में कैंसर कारक लिडैन की मात्रा बीआईएस मानकों की तुलना में तकरीबन 140 गुना अधिक थी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने वाली कई संस्थाएं भी इस नतीजे पर हैं कि फास्ट फूड के इस्तेमाल से पेट तो जरूर भर जाता है लेकिन शरीर को पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता है। इन संस्थाओं का कहना है कि फास्ट फूड को दैनिक भोजन में शामिल करना ही नहीं चाहिए। शोधकर्ताओं का कहना है कि फास्ट फूड के निर्माण में कृत्रिम रंग मिलाए जाते हैं जिससे शरीर में कई किस्म की एलर्जी का प्रभाव बढ़ जाता है।

विशेषज्ञों की मानें तो बहुत अधिक मात्रा में लेड के सेवन से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। न्यूरोलॉजिकल समस्या के अलावा खून के संचार में कमी और किडनी फेल होने की स्थिति तक बन सकती है। शोधकर्ताओं द्वारा दावा किया जा चुका है कि फास्ट फूड के सेवन से दिमाग में कुछ ऐसे खतरनाक केमिकल पहुंच जाते हैं जो दिमाग और सुस्त कर देते हैं। चूंकि कम उम्र के बच्चे फास्ट फूड का सर्वाधिक सेवन करते हैं लिहाजा उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है। उनके शारीरिक विकास में रुकावट के अलावा पेट संबंधी कई बीमारियां मसलन पेट दर्द, नर्व डैमेज और अन्य संवेदनशील अंगों को नुकसान पहुंचता है। फास्ट फूड बहुत फास्ट तरीके से शरीर को बर्बाद करता है।

मणिपुर में पहाड़ी बनाम घाटी हुआ जंग का मैदान

मणिपुर को भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है। मणिपुर के हरे-भरे मखमली पहाड़ और प्राकृतिक दृश्य हर किसी के दिल में अपनी जगह बना सकते हैं। कहते हैं कि जब आप फ्लाइट में मणिपुर के करीब पहुंचते हो तो राज्य की खूबसूरती देखकर आपका प्लेन से कूदने का मन करेगा। मणिपुर को भारत का गहना भी कहा जाता है क्योंकि यह नौ पहाड़ियों से घिरा हुआ है और बीच में एक अंडाकार आकार की घाटी है, जो प्राकृतिक रूप से बना एक गहना है। किंतु आज यह सुंदर दृश्यों से पटा राज्य हिंसा के कारण अशांत है। मणिपुर में मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति दर्जे की मांग के विरोध में तीन मई को अधिकतम दस जिलों में %आदिवासी एकता मार्च% के बाद हिंसा हुई। इस दौरान कुकी और मैतेई समुदाय के बीच हिंसक झड़प हो गई थी। हिंसा कुकी समुदाय की ओर से शुरु की गई तब से ही वहां हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। दुर्भाग्य इस बात का है कि कुछ अर्बन नक्सलियों जैसे कुत्सित मानसिकता के बुद्धिजीवियों द्वारा किसी भी राज्य में कहीं भी हिंसा हो , उसे जातीय संघर्ष अथवा धार्मिक रंग दे देने का नैरेटिव सैट कर दिया जाता है, जिस कारण आम समाज वास्तविकता से दूर समाचार सुनकर ही अपना रूख तय कर लेता है।

मणिपुर हिंसा में अनुमान है कि 130 से अधिक लोग अपनी जान गंवा चुके हैं तथा लगभग 435 लोग घायल हुए हैं। यहीं नहीं 65,000 से अधिक लोग अपना घर छोड़ शरणार्थी शिविरों में डर के साये में जीवन बसर कर रहे हैं। मणिपुर में हिंसा की शुरुआत करने वाले कुकी समुदाय के विधायक चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, अब वे मणिपुर से अलग राज्य की मांग का समर्थन कर रहे हैं, जबकि 90 प्रतिशत जमीन पर इसी समुदाय का कब्जा है। इनको हिंसा के लिए उकसाने वालों की भी निष्पक्ष जाँच अत्यंत आवश्यक है। दूसरी तरफ, प्राचीन भारतीय संस्कृति को सहेजकर रखने वाला मैतई समुदाय भले ही आज अपने ही क्षेत्र में हाशिये पर पहुंच गया है, लेकिन वह अलग राज्य नहीं चाहता अपितु राज्य को बांटने का विरोध कर रहा है। मैतेई समुदाय का भूमि से भावनात्मक जुड़ाव है। यह घाटी के मैदानी इलाकों में रहने वाले 53 प्रतिशत बहुसंख्यक मैतेई समुदाय और पहाड़ियों में रहने वाले 16 प्रतिशत अल्पसंख्यक कहे जाने वाले कुकी आदिवासी लोगों के बीच संघर्ष है। मैतेई लोग मणिपुर में राजनीतिक सत्ता पर नियंत्रण रखते हैं, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में कुकी समुदाय कानून द्वारा प्रदत्त सुरक्षा चक्र में 90 प्रतिशत क्षेत्र में कब्जा जमा कर बैठा है । पिछली सरकारों में वोट के लालच में म्यांमार व बांग्लादेश सहित बाहरी लोगों को भी अनुसूचित जनजाति में शामिल कर मणिपुर के 90 प्रतिशत पहाड़ी क्षेत्र में योजनाबद्ध ढंग से बसाकर कानूनी रूप से संरक्षित किया गया है जो अब उच्च न्यायालय के एक निर्देश के बाद मैतेई समुदाय को मंजूर नहीं है। ऐसा कानून किसी भी राज्य में लागू नहीं है कि अपने ही राज्य में बहुसंख्यक समुदाय जमीन ना खरीद सकें अथवा अपने ही राज्य के 10 प्रतिशत हिस्से में सीमित हो जाये । यह दुख , यह अन्याय मैतेई समुदाय बहुत अर्से से सहन करता आ रहा है और अब उच्च न्यायालय द्वारा जल्दबाजी में दिया गया अपरिपक्व निर्देश मैतेई समुदाय के जख्मों को हरा कर गया उनकी सुप्त उम्मीदों ने अंगडाई लेना शुरु कर दिया और जब मैतेई समुदाय ने जमीन खरीदने का अधिकार प्राप्त करने के लिए अपने समुदाय को अनुसूचित जनजाति में शामिल करने की माँग उठाई तो मैतेई समुदाय के मार्च पर कुकी समुदाय ने आक्रमण कर दिया जो पिछले दो महीने से जारी है।

मैतेई समुदाय हिंदू हैं। वे मणिपुर में बहुसंख्यक है। वर्तमान में यह समुदाय केवल इंफाल घाटी में रहने को मजबूर हैं। इसकी वजह यह है कि उन पर अपने ही राज्य के पर्वतीय इलाकों में संपत्ति खरीदने और खेती करने पर कानूनी तौर पर रोक लगाई गई है। यहां इसाई बन चुके कुकी और नागा समुदाय के लोग रहते हैं, जिनकी आबादी 40 प्रतिशत है किंतु ये मणिपुर के कुल क्षेत्रफल के 90 प्रतिशत हिस्से में रहते हैं। मैतेई समुदाय की जनसंख्या करीब 53 प्रतिशत है, लेकिन वह करीब 10 प्रतिशत क्षेत्र में ही रहने को विवश है। कानूनन रूप से मैतेई पर्वतीय क्षेत्रों में नहीं रह सकता। यद्यपि वर्ष 1949 में भारत संघ में राज्य के विलय से पहले मैतेई को जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त थी। बाद में क्यों बदल दी गई यह चुनावी गणित लोगों की समझ से बाहर है। मैतेई समुदाय मानता है कि एसटी का दर्जा समुदाय को 'संरक्षित' करने और उनकी 'पैतृक भूमि, परंपरा, संस्कृति एवं की रक्षा' के लिये आवश्यक है। मैतेई समुदाय के लोग पहाड़ी हिस्से में जमीन नहीं खरीद सकते। वहीं मैतेई समुदाय का कहना है कि जब हम पहाड़ों पर जमीन नहीं खरीद सकते तो कुकी घाटी में क्यों खरीद सकते हैं। कुकी और नागा समुदाय के इंफाल घाटी में रहने पर कोई कानूनी बंदिश नहीं है। यह असंतुलन , यह अन्याय ही मोहब्बत की दूकान में नफरत का जहर घोल रही है।

भगवान कृष्ण को मानने वाला यह राज्य समृद्ध संस्कृति का प्रतीक माना जाता रहा है। यहां पोलो और फील्ड हॉकी जैसे खेल काफी लोकप्रिय हैं। मणिपुर की संस्कृति ने मणिपुरी नामक एक स्वदेशी नृत्य रूप का प्रचार किया, जहां पुरुष और महिला दोनों समान सहजता से प्रदर्शन करते हैं। यह नृत्य मुख्यत: हिन्दू वैष्णव प्रसंगों पर आधारित होता है जिसमें राधा और कृष्ण के प्रेम प्रसंग प्रमुख है।उनका धर्म भगवान कृष्ण के जीवनकाल को दर्शाने वाले नृत्य नाटकों पर केंद्रित है।

उल्लेखनीय है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, मणिपुर जर्मन गुट के जापानी और इंग्लैंड के मित्र देशों की सेनाओं के बीच लड़ाई का केंद्र था। युद्ध के बाद, महाराजा बोधचंद्र ने राज्य को भारत में विलय करने के लिए परिग्रहण संधि पर हस्ताक्षर किए। 1956 में इसे केंद्र शासित प्रदेश और 1972 में पूर्ण राज्य बना दिया गया।

मणिपुर की मैतेई भाषा जिसे मणिपुरी भी कहते है, भारत के मणिपुर प्रान्त एवं निचले असम के लोगों द्वारा बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है। मणिपुरी भाषा, मैतेई लोगों की मातृभाषा है।

वर्तमान में कुछ आतंकी संगठनों के सहयोग से व वोटों की राजनीति के स्वार्थ-सिद्धि के कारण यहां के आदिवासी जनजातीय समुदाय को हिंसा की आग में झोंका जा रहा है । मणिपुर में हिंसा की घटनाएं कम होने की बजाय लगातार बढ़ती जा रही हैं। हिंसा और आगजनी की इन घटनाओं के बीच बीजेपी नेताओं के घरों और ऑफिस को निशाना बनाया गया है। मणिपुर में केंद्रीय मंत्री आरके रंजन सिंह के आवास को गुस्साई भीड़ द्वारा आग के हवाले के किए जाने के अगले ही दिन बीजेपी के कई ऑफिस में तोड़फोड़ की खबर सामने आई। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष शारदा देवी के आवास पर भी हमला किया गया। मणिपुर में दो महीने से अधिक समय से जातीय हिंसा जारी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी मणिपुर का दौरा किया था और राज्य में शांति बहाल करने के अपने प्रयासों के तहत विभिन्न वर्गों के लोगों से मुलाकात की थी। बावजूद इसके हिंसा की घटनाएं कम नहीं हुई और विपक्षी दल इसको लेकर बीजेपी पर हमलावर हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी हिंसा के कारणों की समीक्षा के बाद एक जून को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि हाईकोर्ट के जल्दबाजी में दिए एक फैसले की वजह से मणिपुर में हिंसा भड़की है। मणिपुर में हिंसा भड़कने की बड़ी वजह हाईकोर्ट के द्वारा मैतेई समुदाय को जनजाति का दर्जा दिए जाने की मांग को स्वीकार करना है। हाईकोर्ट के इसी फैसले के बाद मैतेई समुदाय निशाने पर आ गया और राज्य में हिंसा भड़क उठी। सेना की तैनाती के बावजूद 75 हजार से अधिक लोगों को पलायन करना पड़ा। दूसरी बड़ी वजह हाईकोर्ट के फैसले के अतरिक्त मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह सरकार द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में अवैध कब्जों पर कार्रवाई और अफीम की खेती पर शिकंजा कसना भी है क्योंकि इन्हीं धंधों से पूर्वोत्तर के आतंकी संगठनों को खाद-पानी मिलता था।

ऑल मैती काउंसिल के सदस्य चांद मैतेई पोशांगबाम के अनुसार कुकी समुदाय के लोग म्यांमार और बांग्लादेश से आए अवैध प्रवासियों पर कार्रवाई से नाराज हैं।

इधर मैतेई समुदाय के लोगों को यह चिंता भी सता रही है कि आतंकी संगठनों व धार्मिक ठेकेदारों की कुछ राजनैतिक दलों के बीच जुगलबंदी से बाहरी लोगों को अवैध रूप से बसाने का कार्य चल रहा है जिससे हमारा अस्तित्व खतरे में है। उनका कहना है कि 1970 के बाद पर यहां कितने रिफ्यूजी आए हैं, इसकी गणना की जाए और यहां पर एनआरसी लागू किया जाए। आंकड़े बताते हैं कि इनकी आबादी 17 प्रतिशत से बढ़कर 24 फीसदी हो गई है। यह चिंता जायज भी है। कुकी समुदाय को यह चिंता है कि यदि मैतेई समुदाय अनुसूचित जनजाति में शामिल हो गया तो वे कहीं भी जमीन खरीद सकते हैं फिर उनके पर्वतीय इलाके में चल रहे अवैध धंधे व अफीम की खेती चौपट हो जायेगी , जिससे उनकी आमदनी पर असर पड़ेगा ।

समस्या गंभीर है किंतु हिंसा को रोकने के लिए विश्वास उत्पन्न करना ही पड़ेगा। एक ओर मैतेई समुदाय को समान अधिकार देने होंगे तो दूसरी ओर कुकी समुदाय को अवैध कार्यों के स्थान पर कुटीर उद्योगों के माध्यम से तथा रोजगार देकर राज्य के विकास हेतु आगे लाना होगा, तभी चिर्शांति स्थापित की जा सकती है ।

स्तंभकार

डॉ उमेश प्रताप वत्स, यमुनानगर, हरियाणा (लेखक : प्रसिद्ध कथाकार, कवि एवं स्तंभकार है)

महाराजा जयचन्द जयंती (26 जुलाई) विशेष

जयचन्द्र (जयचन्द), महाराज विजयचन्द्र के पुत्र थे। ये कन्नौज के राजा थे। जयचन्द का राज्याभिषेक वि.सं. 1226 आषाढ शुक्ल 6 (ई.स.1170 जून) को हुआ। राजा जयचन्द पराक्रमी शासक था। उसकी विशाल सैन्य वाहिनी सदैव विचरण करती रहती थी, इसलिए उसे 'दल-पंगुल' भी कहा जाता है। इसका गुणगान पृथ्वीराज रासो में भी हुआ है। राजशेखर सूरि ने अपने प्रबन्ध-कोश में कहा है कि काशीराज जयचन्द्र विजेता था और गंगा-यमुना दोआब तो उसका विशेष रूप से अधिकृत प्रदेश था। नयनचन्द्र ने रम्भामंजरी में जयचन्द को यवनों का नाश करने वाला कहा है।

युद्धप्रिय होने के कारण इन्होंने अपनी सैन्य शक्ति ऐसी बढ़ाई की वह अद्वितीय हो गई, जिससे जयचन्द को दळ पंगुळ' की उपाधि से जाना जाने लगा। जब ये युवराज थे तब ही अपने पराक्रम से कालिंजर के चन्देल राजा मदन वर्मा को परास्त किया। राजा बनने के बाद अनेकों विजय प्राप्त की। जयचन्द ने सिन्धु नदी पर मुसलमानों (सुल्तान, गौर) से ऐसा घोर संग्राम किया कि रक्त के प्रवाह से नदी का नील जल एकदम ऐसा लाल हुआ मानों अमावस्या की रात्रि में ऊषा का अरुणोदय हो गया हो (रासो)। यवनेश्वर सहाबुद्दीन गौरी को जयचन्द्र ने कई बार रण में पछाड़ा (विद्यापति-पुरुष परीक्षा) । रम्भामञ्जरी में भी कहा गया है कि जयचन्द्र ने यवनों का नाश किया। उत्तर भारत में उसका विशाल राज्य था। उसने अणहिलवाड़ा (गुजरात) के शासक सिद्धराज को हराया था। अपनी राज्य सीमा को उत्तर से लेकर दक्षिण में नर्मदा के तट तक बढ़ाया था। पूर्व में बंगाल के लक्ष्मणसेन के राज्य को छूती थी।

तराईन के युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज चौहाण को परास्त कर दिया था। इसके परिणाम स्वरूप दिल्ली और अजमेर पर मुसलमानों का आधिपत्य हो गया था। यहाँ का शासन प्रबन्ध गौरी ने अपने मुख्य सेनापति ऐबक को सौंप दिया और स्वयं अपने देश चला गया था। तराईन के युद्ध के बाद भारत में मुसलमानों का स्थायी राज्य बना। ऐबक गौरी का प्रतिनिधि बनकर यहाँ से शासन चलाने लगा। इस युद्ध के दो वर्ष बाद गौरी दुबारा विशाल सेना लेकर भारत को जीतने के लिए आया। इस बार उसका कन्नौज जीतने का इरादा था। कन्नौज उस समय सम्पन्न राज्य था। गौरी ने उत्तर भारत में अपने विजित इलाके को सुरक्षित रखने के अभिप्राय से यह आक्रमण किया। वह जानता था कि बिना शक्तिशाली कन्नौज राज्य को अधीन किए भारत में उसकी सत्ता कायम न रह सकेगी ।

तराईन के युद्ध के दो वर्ष बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने जयचन्द पर चढ़ाई की। सुल्तान शहाबुद्दीन रास्ते में पचास हजार सेना के साथ आ मिला। मुस्लिम आक्रमण की सूचना मिलने पर जयचन्द भी अपनी सेना के साथ युद्धक्षेत्र में आ गया। दोनों के बीच इटावा के पास 'चन्दावर नामक स्थान पर मुकाबला हुआ। युद्ध में राजा जयचन्द हाथी पर बैठकर सेना का संचालन करने लगा। इस युद्ध में जयचन्द की पूरी सेना नहीं थी। सेनाएँ विभिन्न क्षेत्रों में थी, जयचन्द के पास उस समय थोड़ी सी सेना थी। दुर्भाग्य से जयचन्द के एक तीर लगा, जिससे उनका प्राणान्त हो गया, युद्ध में गौरी की विजय हुई। यह युद्ध वि.सं. 1250 (ई.स.1194) को हुआ था।

जयचन्द पर देशद्रोही का आरोप लगाया जाता है। कहा जाता है कि उसने पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए गौरी को भारत बुलाया और उसे सैनिक संहायता भी दी। वस्तुत: ये आरोप निराधार हैं। ऐसे कोई प्रमाण नहीं हैं जिससे पता लगे कि जयचन्द ने गौरी की सहायता की थी। गौरी को बुलाने वाले देश द्रोही तो दूसरे ही थे, जिनके नाम पृथ्वीराज रासो में अंकित हैं। संयोगिता प्रकरण में पृथ्वीराज के मुख्य-मुख्य सामन्त काम आ गए थे। इन लोगों ने गुप्त रूप से गौरी को समाचार दिया कि पृथ्वीराज के प्रमुख सामन्त अब नहीं रहे, यही मौका है। तब भी गौरी को विश्वास नहीं हुआ, उसने अपने दूत फकीरों के भेष में दिल्ली भेजे। ये लोग इन्हीं लोगों के पास गुप्त रूप से रहे थे। इन्होंने जाकर गौरी को सूचना दी, तब जाकर गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था। गौरी को भेद देने वाले थे नित्यानन्द खत्री, प्रतापसिंह जैन, माधोभट्ट तथा धर्मायन कायस्थ जो तेंवरों के कवि (बंदीजन) और अधिकारी थे (पृथ्वीराज रासो-उदयपुर संस्करण)।

समकालीन इतिहास में कही भी जयचन्द के बारे में उल्लेख नहीं है कि उसने गौरी की सहायता की हो। यह सब आधुनिक इतिहास में कपोल कल्पित बातें हैं। जयचन्द का पृथ्वीराज से कोई वैमनस्य नहीं था। संयोगिता प्रकरण से जरूर वह थोड़ा कुपित हुआ था। उस समय पृथ्वीराज, जयचन्द की कृपा से ही बचा था। संयोगिता हरण के समय जयचन्द ने अपनी सेना को आज्ञा दी थी कि इनको घेर लिया जाए। लगातार पाँच दिन तक पृथ्वीराज को दबाते रहे। पृथ्वीराज के प्रमुखप्रमुख सामन्त युद्ध में काम आ गए थे। पाँचवे दिन सेना ने घेरा और कड़ा कर दिया। जयचन्द आगे बढ़ा

थी। अगर पृथ्वीराज सहायता माँगता तो जयचन्द सहायता जरूर कर सकता था। अगर जयचन्द और गौरी में मित्रता होती तो बाद में गौरी जयचन्द पर आक्रमण क्यों करता ? अत: यह आरोप मिथ्या है। पृथ्वीराज रासो में यह बात कहीं नहीं कही गई कि जयचन्द ने गौरी को बुलाया था। इसी प्रकार समकालीन फारसी ग्रन्थों में भी इस बात का संकेत तक नहीं है कि जयचन्द ने गौरी को आमन्त्रित किया था। यह एक सुनी-सुनाई बात है जो एक रूढी बन गई है।

लेखक :छाजू सिंह, बड़नगर

हरियाणा चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज कार्यकारणी का हुआ गठन

गजब हरियाणा न्यूज/अमित बंसल

घरौंडा, हरियाणा चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज करनाल की एक मीटिंग का आयोजन स्थानीय होटल में आयोजित किया गया।इसमें नवनियुक्त चेयरमैन सुशील जैन द्वारा अपनी नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें ऐ.पी.एस चोपडा महासचिव, हरमीत सिंह हैप्पी सचिव, अनिल जैन कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गयी। इसी के साथ ही चैम्बर के विभन्न पदों के लिए वीरेंदर सिंह , मनोज अरोडा, के एल सिंगला वाईस चेयरमैन, आर.एल शर्मा, रमेश चंद गुप्ता, जे.आर कालडा, विजय सेतिया सलाहकार,भूषण गोयल,सतीश गोयल,सुरिंदर कुमार जैन, दिनेश जिंदल, अनिल गर्ग,विनोद गोयल,अनीश गुप्ता, पंकज गोयल, सुभाष गोयल, संजय जैन, सुशील जैन, जगमाल गुप्ता, विजय कौशल, राज पल सिंगला, अजय बंसल, नरींद्र अरोडा, डॉ पी.के जैन, रविंद्र कुमार, सुरिंद्र गुप्ता, प्रवीण गर्ग, विनोद मालिक, प्रमोद कुमार, रविंद्र ढल्ल, संजीव कुमार, मनीष गुप्ता, सुभाष, राजेश चावला, विनोद कुमार, कमल, इन्दर पाल सिंह, पवन गिरधर, मंजीत बब्बर, नरेश बंसल, संजीव मेहता, सुरेश राखा, गौरव जैन, अनूप भारद्वाज, अनिल सहगल, दिनेश गुप्ता, रोहित धवन , सुरेश जैन, प्रमोद अरोरा, बलदेव गिरधर

एग्जीक्यूटिव सदस्य नियुक्त किये गए। चेयरमैन सुशील जैन ने बताया कि सरकार द्वारा नई नीतियों के बारे में उद्योगपतियों को जानकारी दिलाना और किसी भी ट्रेड को कोई समस्या आती है तो सभी साथियों के सहयोग से उन समस्याओ को हल करवाना हमारी प्राथमिकता रहेंगी।

जनहित में सरकार ने शुरू किया ऑटो अपील सिस्टम : उपायुक्त

समय पर सेवा न देने पर अपील में चला जाता है आवेदन
आस के माध्यम से संबंधित अधिकारी की जवाबदेही होगी सुनिश्चित

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल, उपायुक्त अनीश यादव ने बताया कि खुशहाल हरियाणा-समृद्ध हरियाणा थीम के साथ वर्तमान हरियाणा सरकार द्वारा निरंतर सुशासन की दिशा में सार्थक कदम बढ़ाए जा रहे हैं। हरियाणा सरकार द्वारा नागरिकों की सुविधा व उनके अधिकारों को ध्यान में रखते हुए ऑटो अपील सिस्टम सॉफ्टवेयर (आस) शुरू किया है।

उपायुक्त ने बताया कि सरकार द्वारा शुरू किए गए आस पोर्टल से अगर किसी व्यक्ति का कार्य राइट टू सर्विस एक्ट के तहत निर्धारित समय सीमा में नहीं होने पर ऑटो अपील सॉफ्टवेयर के तहत आवेदन अपीलेट अथॉरिटी में चला जाएगा। अपीलेट अथॉरिटी के दायरे में भी काम नहीं होने पर आवेदन आगे वरिष्ठ अधिकारी के पास चला जाएगा। अगर इन दोनों स्तरों पर भी कार्य का निपटान नहीं होगा तो आवेदन स्वतं ही राइट टू सर्विस कमीशन के पास आ जाएगा। यह कदम सरकार ने जनहित को ध्यान में रखते हुए प्रशासनिक कार्यशैली को जवाबदेह, पारदर्शी, निष्पक्ष और प्रभावी बनाने के मद्देनजर उठाया है।

उपायुक्त अनीश यादव ने बताया कि आमजन से सीधे जुड़े विभिन्न सरकारी विभागों की सैकड़ों सेवाएं सेवा का अधिकार अधिनियम के दायरे में नोटिफाई की हुई हैं। इनमें से 277 सेवाएं ऑनलाइन सरल पोर्टल के माध्यम से उपलब्ध करवाई जा रही हैं। आस आमजन के अधिकारों को सशक्त बनाने की दिशा में सरकार का एक अहम कदम है। उन्होंने सॉफ्टवेयर का मुख्य उद्देश्य बताते हुए कहा कि अगर किसी व्यक्ति का काम समय पर नहीं होता और वह काम सेवा का अधिकार अधिनियम के दायरे में आता है तो ऑटो अपील सॉफ्टवेयर के तहत आवेदन अपीलेट अथॉरिटी में चला जाएगा। हर स्तर पर निर्धारित समयावधि के दौरान अपील पर एक्शन होगा। ऑटो अपील सॉफ्टवेयर के शुरू होने से लोगों के कार्य एक निर्धारित समय सीमा के अंदर हो रहे है। राइट टू सर्विस एक्ट के दायरे में आवेदक को सरकारी सेवाएं और योजनाओं का समयबद्ध लाभ देना संबंधित विभाग और अधिकारी का सेवा दायित्व है।

31 जुलाई तक प्रॉपर्टी टैक्स जमा कराने पर ब्याज में मिलेगी 30 प्रतिशत छूट : उपायुक्त अनीश यादव

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल, हरियाणा सरकार ने प्रॉपर्टी टैक्स की राशि 31 जुलाई, 2023 तक जमा कराने पर ब्याज राशि में 30 प्रतिशत छूट देने का निर्णय लिया है। पहले यह छूट 10 प्रतिशत थी। सरकार की ओर से ब्याज छूट में 20 प्रतिशत की वृद्धि कर दी गई है। इससे शहरी क्षेत्रों में रहने वाले सभी वर्गों को काफी राहत मिलेगी। जिन नागरिकों का प्रॉपर्टी टैक्स बकाया है वे प्रॉपर्टी टैक्स जमा कराकर सरकार की इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

उपायुक्त अनीश यादव ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा में प्रॉपर्टी टैक्स अब पूरी तरह स्ट्रीम लाईन हो चुका है। प्रॉपर्टी टैक्स की ब्याज राशि में 30 प्रतिशत छूट का लाभ अधिकतम लोगों को मिले इसके लिए सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे बकायेदारों को प्रॉपर्टी टैक्स जमा कराने के लिए जागरूक एवं प्रेरित करें ताकि वे सरकार की इस योजना का लाभ उठा सकें। जिन लोगों की तरफ अधिक प्रॉपर्टी टैक्स बकाया है वे जल्द से जल्द अपना प्रॉपर्टी टैक्स जमा करवाएं ताकि नगर निगमों व नगर परिषद को विकास कार्यों के लिए पैसा प्राप्त हो सके। यदि यह पैसा निगम व परिषद के खजाने में आता है तो शहर में और अधिक तेजी से विकास कार्य संपन्न कराए जा सकेंगे।

डॉ रवीन्द्र सिंह बलियाला चेयरमैन, अनुसूचित जाति आयोग हरियाणा सरकार, गजब हरियाणा समाचार पत्र के अंक का विमोचन करते हुए, साथ में डॉ कपूर सिंह सेवानिवृत कार्यकारी अभियंता, रोहतास मेहरा और गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा को नरवाना में डॉ रवीन्द्र सिंह बलियाला चेयरमैन, अनुसूचित जाति आयोग हरियाणा सरकार, डॉ कपूर सिंह सेवानिवृत कार्यकारी अभियंता, रोहतास मेहरा संस्थापक बसवा टीम

शेर सिंह अम्बाला, अध्यक्ष ग्लोबल रविदासिया वेलफेयर एसोसिएशन को गजब हरियाणा समाचार पत्र के पांच वर्ष पूर्ण होने पर 'विशिष्ठ समाज सेवा सम्मान -2023' से सम्मानित करते गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा।

कृति: फूस का महल
लेखक: विजय 'विभोर'
विधा: कहानी
मूल्य: 200/-
प्रकाशक: समदर्शी प्रकाशन, 335 देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ-250001 (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशक का कहना है कि ''ये कहानियाँ नहीं सत्य का आईना है।'' मुझे भी कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है कि विजय ''विभोर'' के द्वारा ''फूस का महल'' में लिखी कहानियाँ कहीं न कहीं जीवन की गहन अनुभूतियों से प्रभावित हैं। यह भी सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को कहानी सुनना बहुत सुखद लगता है और हर एक ने अपना बचपन दादी, नानी या अपनी माँ से कहानियाँ सुन कर ही बिताया होता है, परन्तु कहानी सुनना जितना अच्छा लगता है कहानी लिखना उतना ही मुश्किल कार्य है। खास तौर पर जब आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में व्यक्ति के पास समय ही नहीं पठन-पाठन के लिए, इसलिए धीरे-धीरे लघुकथा इतनी प्रचलित हो गई हैं, क्योंकि इसको पढ़ने में पाठक का दो से ढ़ाई मिनट का समय ही लगता है। ऐसे में कहानी-संग्रह लिखना एक साहस की बात है। लेखक ने यह साहस किया और उसमें सफल भी रहा। ''फूस का महल'' में आठ कहानियाँ संग्रहित हैं। आठों पाठक को बांध कर रखने में कामयाब रही हैं।

संग्रह की प्रथम कहानी ''मेरा अस्तित्व'' फ्लैशबैक में रची गई है। नायक शंकर फ्लैशबैक में अपने बचपन में पहुंच जाता है जहां शंकर का साहूकार की पुत्रवधु गौरीमेम से प्रभावित होना, उसके कारण शिक्षा ग्रहण करके उच्च अधिकारी बनना। जिससे वो गौरीमेम के अहसानों तले दबा हुआ है जिसका फायदा गौरीमेम का भाई छुटन उठाना चाहता है। शंकर अपने आपको बहुत दुविधा में पाता है। उसकी नींद उड़ जाती है, पर ऑफिस पहुंचते ही अपनी दृढ़ निणर्य शक्ति के कारण वह वही निणर्य लेता है, जो उसे सही लगता है। यह कहानी पाठक को एक ओर श्रम एवं शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताती है तथा दूसरी ओर स्वतन्त्र निणर्य लेने की ओर प्रेरित करती है।

''फूस का महल'' कहानी जिस पर पुस्तक का नामकरण हुआ है, में लेखक ने ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। जहां आज भी जात-पात का बोल बाला है। कहानी का नायक रामदीन एक दलित युवक है। जो अपने दादा द्वारा लिए गए कर्ज को उतारने के लिए हवेली पर काम करता है। मालिक का लड़का बख्तावर सिंह उसे 'कमीण का बीज' तक बोलता है। बेशक उच्च जाति के लोग अब कानून के डर से थोड़ा डर जाते हैं, पर आपसी बातचीत में बहुत से उच्च जाति वाले गरूर में आज भी ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। कहानी में रामदीन बख्तावर की लड़की की शादी में कन्यादान लिखवाना चाहता है, जो कहीं उस लड़की से उसका प्यार है। क्योंकि बचपन में उसने उस लड़की की जान बचाई थी। साथ ही सात साल की उम्र से उस हवेली से जुड़ी अपनी वफादारी पर सार्वजनिक मोहर लगवाना भी था, परंतु यह सब उसे बहुत महंगा पड़ता है। उसे गांव छोड़ना पड़ता है। दलितों की बस्ती आग के हवाले कर दी जाती है। पिता और बूढ़ी गायें उसमें स्वाह हो जाते हैं। बहुत ही मार्मिक घटना है जो आज भी देश को आजाद हुए 70 साल हो गए, गाहे-बगाहे देखने और सुनने को मिल ही जाती है। पलायन के बाद शहर में रामदीन अपने बेटे का स्कूल में दाखिला करवा देता है। गांव में रहता तो उसका बेटा भी अपनी जिंदगी हवेली में काम करके कर्ज उतारने में स्वाह कर देता। कहानी से संदेश मिलता है कि हम सभ्य समाज में रहते हैं। सबको सम्मान दे और सम्मान से जीने दें।

पुस्तक की तीसरी कहानी ''रेड गोल्ड'' में लेखक ने रक्तदान का महत्त्व बता कर रक्तदान के प्रति समाज को जागरूक करने का काम किया है। गायक सिंह के माध्यम से रक्तदान को लेकर लोगों में फैली भ्रांतियों का भी निवारण किया है। जहां गायक सिंह पहले रक्तदान को लेकर भयभीत था वहीं लोगों द्वारा उसके बेटे को खुशी-खुशी रक्त देने से उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। इसमें रक्तदान के साथ-साथ नेत्रदान और अंगदान की महिमा भी समाज को बताई गई है। इस कहानी के माध्यम से लेखक विजय ''विभोर'' ने समाज के प्रति युवाओं के 'पे बैक टू सोसाइटी' जैसे दायित्व का आभास करवाया है। देश का युवा भी सामाजिक कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। यह एक अच्छा संदेश देती युवाओं के लिए प्रेरणादायक कहानी है।

चौथी रचना ''नाखून'' है जिसमें लेखक ने रिश्तों के महत्त्व की बात की है। हर परिवार में छोटे-मोटे मन-मुटाव आम बात है, किन्तु उन्हें तूल नहीं देना चाहिए। अलबत्ता यह विचार करना चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ। नवविवाहित जोड़ों को किस प्रकार के संघर्ष से दो चार होना पड़ता है। कहानी का उद्देश्य है, अवांछनीय परिस्थितियों को किसी भी प्रकार रोकना और पारिवारिक एकता और आपसी समझ को बनाए रखना।

अगली रचना ''जिंदा हूँ मैं'' एक गम्भीर समस्या की ओर इंगित करती है। शिक्षण संस्थानों में नारी का दैहिक और मानसिक शोषण, एक विचारणीय विषय है। जैसा कि आरती देह का समझौता करने से मना करती है तो उसके भविष्य पर ही प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

''आस के पंछी'' कहानी में ग्रामीण परिवेश दिखाया है। इसमें खेतिहार मजदूरों के जीवन को बंधुआ के पात्र के माध्यम से दिखाया गया है। इनकी मुश्किलों पर लिखने की बहुत आवश्यकता है। बंधुआ के माता-पिता की जमींदार के खेतों में काम करते हुए सांप के काटने से मृत्यु और बुधराम का स्कूल की पढ़ाई छोड़ जमींदार का बंधुआ बन जाना, बहुत ही मार्मिक है। ऐसी बहुत सी घटनाएं शांति और अन्य के माध्यम से देखने को मिलती हैं।

प्रकाशक का यह कहना है कि विजय 'विभोर' जी की कहानियाँ ''बहुत धीमी आँच पर तैयार जलेबियाँ है'' जो भीतर तक ज्ञान के रस से भरी हैं। अक्षरथ: सत्य प्रतीत होता है। कहानी ''जलेबियाँ'' ही देख लें। यह कहानी फ्लैशबैक में चलती है

और बाल यौन शोषण जैसी गम्भीर समस्या को उठाती है। पिता-पुत्र के अटूट प्रेम के माध्यम से दिखाया है कि बच्चों के साथ ज्यादा सख्त व्यवहार के क्या दुष्प्रभाव हो सकते हैं। कहानी अत्यंत संवेदनशील बन पड़ी है और पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

इस कड़ी की अन्तिम रचना है ''सच्ची कमाई'' जिसमें लेखक ने रामशरण नामक एक सरकारी कर्मचारी की कार्यशैली को दिखाया है। जो आने जाने वालों को ऑफिस में चाय पानी भी अपने पैसों से पिलाता है। रिश्वत लेना तो दूर की बात है। उनके बेटे रंजन को उनकी कद्र, उनकी मृत्यु के बाद समझ आती है। जब सब लोग रामशरण के नेक नीति की बात करते हैं, तब रंजन को अपनी मां शांति की बात समझ में आती है, कि मां ने क्यों कहा कि 'तुम्हारे पिताजी ने बहुत बड़ा धन कमा रखा है, उन्होंने लोग कमा रखे हैं बेटा'।

'फूंस का महल' कहानी संग्रह की सभी कहानियां पठनीय एवं रोचक हैं। संवाद चुटीले, भाषा अत्यंत सरल एवं सजीव है, साथ ही आंचलिक शब्दों का पात्रों के अनुसार प्रयोग इसे बहुत सुंदर बना देता है।

डॉ सर्व पल्ली राधाकृष्णन का कथन है कि 'साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है बल्कि एक नया वातावरण तैयार करना भी है'। विजय 'विभोर' जी की यह पुस्तक पढ़ कर पाठक ऐसा अनुभव करता है। क्योंकि लेखक ने अपनी कहानियों के माध्यम से गरीबी, कर्ज, जात - पात, यौन शोषण, स्त्री सम्मान जैसी अनगिनत समस्याओं पर खुलकर अपनी कलम चलाई है। लेखक की संवेदनशीलता, आदर्शवादीता, समाज के उत्थान में अपना योगदान देने की भावना, उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। निष्कर्षत: आलोच्य कृति की सभी कहानियां अनुभूति की सच्चाई, भाव की गहराई, अभिव्यक्ति की पारदर्शिता, विचारों की संप्रेषणीयता, शैली की रोचकता लिए हुए है। लेखक को इस खूबसूरत साहित्यिक कृति के लिए साहित्य जगत में हमेशा याद रखा जाएगा। आशा विजय 'विभोर' उनकी साहित्यिक यात्रा को यूंही अनवत जारी रखें, यही प्रार्थना है उस परमपिता से। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

समीक्षक
डॉ अंजना गर्ग
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष लोक प्रशासन विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

साईं बुल्ले शाह जीवन परिचय

नोट: सभी पाठकों को बुल्ले शाह की काफियों से रूबरू कराया जाएगा। आज के अंक में बाबा बुल्ले शाह के जीवन से परिचित कराते हैं।

बाबा बुल्ले शाह (1680-1757) पंजाबी सूफी काव्य के आसमान पर एक चमकते सितारे की तरह हैं। उनका मूल नाम अब्दुल्लाशाह था । आगे चलकर उनका नाम बुल्ला शाह या बुल्ले शाह हो गया। प्यार से लोग उन्हें साईं बुल्ले शाह या बाबा बुल्ला भी कहते हैं । उनके जीवन से सम्बन्धित विद्वानों में मतभेद है। बुल्ले शाह के माता-पिता पुश्तैनी रूप से वर्तमान पाकिस्तान में स्थित बहावलपुर राज्य के 'गिलानियाँ उच्च' नामक गाँव से थे, जहाँ से वे किसी कारण से मलकवाल गाँव (ज़िला मुलतान) गए। मालकवल में पाँडोके नामक गाँव के मालिक अपने गाँव की मस्जिद के लिये मौलवी ढूँढते आए। इस कार्य के लिये उन्होंने बुल्ले शाह के पिता शाह मुहम्मद दरवेश को चुना और बुल्ले शाह के माता-पिता पाँडोके (वर्तमान नाम पाँडोके भट्टीयाँ) चले गए।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि बुल्ले शाह का जन्म पाँडोके में हुआ था और कुछ का मानना है कि उनका जन्म उच्च गिलानियाँ में हुआ था और उन्होंने अपने जीवन के पहले छ: महीने वहीं बिताए थे। बुल्ले शाह के दादा सय्यद अब्दुर रज्ज़ाक़ थे और वे सय्यद जलाल-उद-दीन बुख़ारी के वंशज थे। सय्यद जलाल-उद-दीन बुख़ारी बुल्ले शाह के जन्म से तीन सौ साल पहले सुर्ख बुख़ारा नामक जगह से आकर मुलतान में बसे थे। बुल्ले शाह हज़रत मुहम्मद साहिब की पुत्री फ़ातिमा के वंशजों में से थे।

उनके पिता शाह मुहम्मद थे जिन्हें अरबी, फारसी और कुरान शरीफ का अच्छा ज्ञान था। उनके पिता के नेक जीवन का प्रभाव बुल्ले शाह पर भी पड़ा। उनकी उच्च शिक्षा कसूर में ही हुई। उनके उस्ताद हज़रत
ख़्वाजा ग़ुलाम मुर्तज़ा सरीखे ख्यातनामा थे। पंजाबी कवि वारिस शाह ने भी ख़्वाजा गुलाम मुर्तज़ा से ही शिक्षा ली थी। अरबी, फारसी के विद्वान होने के साथ-साथ आपने इस्लामी और सूफी धर्म ग्रंथो का भी गहरा
अध्ययन किया।

परमात्मा की दर्शन की तड़प उन्हें फकीर हज़रत शाह कादरी के द्वार पर खींच लाई। हज़रत इनायत शाह का डेरा लाहौर में था। वे जाति से अराईं थे। अराईं लोग खेती-बाड़ी, बागबानी और साग-सब्जी की खेती करते थे। बुल्ले शाह के परिवार वाले इस बात से दुखी थे कि बुल्ले शाह ने निम्न जाति के इनायत शाह को अपना गुरु बनाया है। उन्होंने समझाने का बहुत यत्न किया परन्तु बुल्ले शाह जी अपने निर्णय से टस से मस न हुए। परिवार जनों के साथ हुई तकरार का जिक्र उन्होंने इन शब्दों में किया। बुल्ले नूं समझावण आइयां भैणा ते भरजाइयां मन्न लै बुल्लिआ साडा कहणा छड दे पल्ला, राइयां। आल नबी औलाद अली नूं तूं क्यों लीकां लाइयां?

भाव-तुम नबी के खानदान से हो और अली के वंशज हो। फिर क्यों अराईं की खातिर लोकनिंदा का कारण बनते हो। परन्तु बुल्ले शाह जी जाति भेद-भाव को भुला चुके थे। उन्होंने उत्तर दिया।

जेहड़ा सानूं सैयद आखे
दोजख मिलण सजाइयां।
जो कोई सानूं, राईं आखे
भिश्ती पींघां पाइयां।

भाव - जो हमे सैयद कहेगा उसे दोजख की सजा मिलेगी और जो हमे अराईं कहेगा वह स्वर्ग में झूला झूलेगा।

उनकी काव्य रचना उस समय की हर किस्म की धार्मिक कट्टरता और गिरते सामाजिक किरदार पर एक तीखा व्यंग्य है। उनकी रचना लोगों में अपने लोग जीवन में से लिए अलंकारों और जादुयी लय की वजह से बहुत ही हर मन प्यारी है। इन्होंने अपने मुरशद को सजण, यार, साईं, आरिफ, रांझा, शौह आदि नामों से पुकारा हैं। बाबा बुल्ले शाह ने बहुत बहादुरी के साथ अपने समय के हाकिमों के जुल्मों और धार्मिक कट्टरता विरुद्ध आवाज उठाई। बाबा बुल्ह्हे शाह जी की कविता में काफियां, दोहड़े, बारांमाह, अठवारा, गंढां और सीहरफियां शामिल हैं ।

जैसे सभी धार्मिक लोगों के साथ दंत-कथाएँ जुड़ जाती हैं, वैसे ही बुल्ह्हे शाह जी के साथ भी कई ऐसी कथाएं जुड़ी हुई हैं । इन कथायों का वैज्ञानिक आधार चाहे कुछ भी न हो परन्तु जन-मानस में उनका विशेष स्थान अवश्य रहता है ।

1.बुल्ले शाह व उनके गुरु के सम्बन्धों को लेकर बहुत सी बातें प्रचलित हैं, बुल्ले शाह जब गुरू की तलाश में थे, वह इनायत जी के पास बगीचे में पहुँचे, वे अपने कार्य में व्यस्त थे, जिसके कारण उन्हें बुल्ले शाह जी के आने का पता न लगा, बुल्ले शाह ने अपने आध्यात्मिक अभ्यास की शक्ति से परमात्मा का नाम लेकर आमों की ओर देखा तो पेड़ों से आम गिरने लगे, गुरु जी ने पूछा, 'क्या यह आम अपने तोड़े हैं?' बुल्ले शाह ने कहा 'न तो मैं पेड़ पर चढ़ा और न ही पत्थर फैंके, भला मैं कैसे आम तोड़ सकता हूँ' बुल्ले शाह को गुरु जी ने ऊपर से नीचे तक देखा और कहा, 'अरे तू चोर भी है और चतुर भी ' बुल्ला गुरु जी के चरणों में पड़ गया; बुल्ले ने अपना नाम बताया और कहा मैं रब को पाना चाहता हूँ । साईं जी उस समय पनीरी क्यारी से उखाड़ कर खेत में लगा रहे थे उन्होंने कहा, 'बुल्लिहआ रब दा की पौणा। एधरों पुटणा ते ओधर लाउणा' इन सीधे-सादे शब्दों में गुरु ने रूहानियत का सार समझा दिया कि मन को संसार की तरफ से हटाकर परमात्मा की ओर मोड़ देने से रब मिल जाता है । बुल्ले शाह ने यह प्रथम दीक्षा गांठ बांध ली।

2.कहते हैं कि एक बार बुल्ले शाह जी की इच्छा हुई कि मदीना शरीफ की जियारत को जाएँ। उन्होंने अपनी इच्छा गुरु जी को बताई। इनायत शाह जी ने वहाँ जाने का कारण पूछा। बुल्ले शाह ने कहा कि 'वहाँ हज़रत मुहम्मद का रोजा शरीफ है और स्वयं रसूल अल्ला ने फ़रमाया है कि जिसने मेरी कब्र की जियारत की, गोया उसने मुझे जीवित देख लिया।'

गुरु जी ने कहा कि इसका जवाब मैं तीन दिन बाद दूँगा। बुल्ले शाह ने अपने मदीने की रवानगी स्थगित कर दी। तीसरे दिन बुल्ले शाह ने सपने में हज़रत रसूल के दर्शन किए। रसूल अल्ला ने बुल्ले शाह से कहा, 'तेरा मुरशद कहाँ है? उसे बुला लाओ।' रसूल ने इनायत शाह को अपनी दाईं ओर बिठा लिया। बुल्ला नजर झुकाकर खड़ा रहा। जब नजर उठी तो बुल्ले को लगा कि रसूल और मुरशद की सूरत बिल्कुल एक जैसी है। वह पहचान ही नहीं पाया कि दोनों में से रसूल कौन है और मुरशद कौन है।

3. कहते हैं बुल्ले के परिवार में शादी थी, बुल्ले ने मुरशद को आने का न्यौता दिया। फकीर तबियत इनायत शाह खुद तो गए नहीं अपने एक मुरीद को भेज दिया। अराईं मुरीद फटे पुराने कपड़ों में शादी में पहुंचा।

खुद को उच्च जाति समझने वाला सैय्यद परिवार तो पहले ही नाखुश था कहां मुरशद के मुरीद का स्वागत करता। बुल्ला भी जशन में ऐसा खोया कि मुरशद के बंदे को भूल बैठा। जब वह मुरीद लौट कर शाह इनायत के पास पहुंचा

और किस्सा सुनाया तो बुल्ले के रवैये पर नाराज़ हुए। बुल्ले से ये उम्मीद न थी। जब बुल्ला मिलने आया तो उसकी तरफ पीठ कर शाह इनायत ने ऐलान कर दिया, बुल्ले का चेहरा नहीं देखूंगा। बुल्ले को गलती का अहसास हुआ, उसका इम्तिहान शुरू हो चुका था। मुरशद नाराज़ था, मुरीद अल्हा को जाने वाले रास्ते में भटक रहा था। क्या करता बहुत मनाया, पर मुरशद तो मुरशद है,जिसको चाहे आलिम (अक्लमंद) करदे, जिसे चाहे अक्ल से खाली कर दे। बुल्ला मुरशद रांझे के लिए तड़पती हीर हो गया। उसने कंजरी से नाचना सीखा, खुद कंजरी बन पैरों में घुंघरू बांध, नंगे पांव गलियों में निकल पड़ा। शाह इनायत को संगीत पसंद था, बुल्ला संगीत में डूब कर खुद को भूल गया। एक पीर के उर्स पर जहां सारे फकीर इक्टठे होते, बुल्ला भी पहुंच गया। मुरशद से जुदाई की तड़प में बुल्ले ने दिल से खून के कतरे-कतरे को निचोड़ देने वाली काफ़ियाँ लिखी थीं। जब सब नाचने-गाने वाले थक कर बैठ गए, बुल्ला मुरशद के रंग में रंगा घंटो नाचता गाता रहा। उसकी दर्द भरी आवाज़ और समर्पण से भरे बोल मुरशद का दिल पिघला गए। जाकर पूछा तू बुल्ला है? वो पैरों पर गिर पड़ा, बुल्ला नहीं मुरशद मैं भुल्ला (भूला) हां। मुरशद ने सीने से लगाकर भुल्ले को जग के बंधनों से मुक्त कर अल्हा की रमज़ से मिला दिया।

अमृतवाणी

संत शिरोमणि गुरु रविदास जिओ की

सो कत जानै पीर पराई ।।जा के अंतरि दरद न पाई ।। रहाउ ।।

व्याख्या : श्री गुरू रविदास महाराज जी पवित्र अमृतवाणी में फरमान करते हुए कहते हैं कि जिन दुहागिन स्त्रियो ने अपने प्रभु पति से प्रेम नहीं किया वो सुहागिन स्त्रियों वाले पति प्रेम के वियोग के दुख को नहीं जान सकती ।

धन गुरुदेव जी

बुद्ध की सीख

भगवान बुद्ध सदविचारों का प्रचार करने के बाद राजग्रह लौटे लेकिन नगर में सन्नाटा था। उनके अनुयायी ने उन्हें बताया भगवन एक राक्षसी को बच्चों का मांस खाने की लत लग गयी है। नगर के अनेक बच्चे गायब हो गये है। इससे नागरिकों ने या तो नगर छोड दिया हैं या वे अपने घरों में दुबके बैठे है।

भगवान बुद्ध को यह भी पता चला कि उस राक्षसी के कई बच्चे है। एक दिन बुद्ध राक्षसी की अनुपस्थिति में खेल के बहाने उसके छोटे बच्चे ओ अपने साथ ले आये। राक्षसी जब घर लौटी तो अपने बच्चे को गायब पाकर बैचेन हो उठी, सबसे छोटा होने के कारण उसका उस बालक से अधिक लगाव था। बैचेनी में ही उसने अपनी रात काटी सुबह जोर-जोर से उसका नाम पुकार कर उसे ढूंढने लगी।

विछोह के दर्द से वह तडप रही थी। । अचानक उसे सामने से बुद्ध गुजरते हुए दिखाई दिये। उसने सोचा कि बुद्ध सच्चे संत हैं जरूर अतंर्यामी होंगे। वह उनके पैरों में गिरकर बोली । भगवन मेरा बच्चा कहां हैं यह बताईये। उसे कोई हिसंक पशु न खा पाये ऐसा आशीर्वाद दिजिए।

बुद्ध ने कहा: इस नगर के अनेक बच्चो को तुमने खा लिया, कितनी ही इकलौती संतानों को भी तुमने नही बक्शा है। क्या तुमने कभी सोचा कि उनके माता पिता कैसे जिन्दा रह रहे होंगे ? बुद्ध के वचन सुनकर वह पश्चाताप की अग्नि में जलने लगी। उसने संकल्प किया कि अब वह हिंसा नही करेगी। भगवान बुद्ध ने उसे समझाया कि वास्तविक सुख दूसरों को दुख देने या दूसरों का रक्त बहाने में नहीं अपितु उन्हें सुख देने में है। उन्होंने उसका बच्चा उसे वापस कर दिया।

न जाने क्यों ये मानव

न जाने क्यों ये मानव, जीवन से हार जाता है
तनाव, चिंता और धोखे से, ये मार खाता है
मिला मुश्किल से ये जीवन, है इस धरा पर
जूझकर इन सबसे तू, क्यों न कर पाता है।

कायर है तू जो जीवन से अपने, हार जाता है
जीवन से ही तो लड़ना, संघर्ष कहलाता है
देख व सोच एक बार, तु परिवार की अपनी
प्यार पाकर जो तुम्हारा, हर पल खुश रह पाता है
न जाने क्यों ये मानव, जीवन से हार जाता है।

समस्या व विचार तू क्यों, न सांझा कर पाता है
प्रभु के दिए हुए आशीर्वाद, को भी ठुकराता है
लगाकर देख प्रभु में ध्यान, एक बार तू अपना
हर समस्या का हल, तू स्वयं ढूंढ पाता है
न जाने क्यों ये मानव, जीवन से हार जाता है।

स्वरचित रचना
आशा विजय 'विभोर'
रोहतक

संतो मगन भया मन मेरा-(प्रवचन-02)

कुछ है कि जो शब्दों में उकेरा नही जाता

कुछ है कि जो बिन कहे रहा नही जाता।
अजीब सी बेचैनी, अजीब सी उलझन है।
हर तरफ अब तो शक और अन्याय का मौसम है।
हर ओर ही हलचल है, हर तरफ पुकारें हैं।
कभी खुद से जीतते हैं, कभी खुद से ही हारे हैं।
कोई भंवर से खींचे,पर न किनारे लाये!
उम्मीद जगा कर फिर, हर आस ही डुबाये!
ये कैसा दौर आया ? ये कौन सी दुनिया है ?
घर में छुपे हैं लेकिन, एक अजनबी साया है!
इंसान को इंसानियत ही याद नही जैसे!
सब कुछ ही बिक रहा है जो पास में हों पैसे!
काला नही अब कुछ भी, हो काम, चाहे फितरत!
'हमने' बहुत रुलाया, ' हमको' रुलाये कुदरत!
हर शख्स उलझता सा, हर सांस सिहरती सी!
विश्वास टूटता सा, सच्चाई बिखरती सी!
कुछ भी नही संभलता, सुन्न हाथ हुआ जाता।
खबरों में जिन्दगी है, सब कुंद हुआ जाता ।
कुछ अब भी है जो शब्दों में उकेरा नही जाता।
कुछ अब भी है जो बिन कहे रहा नही जाता।

लता रुचि ओझा (3-10-2020).

मानव जगत के महा-आदियोगी : गौतम बुद्ध

योग साधना तो हजारों वर्षों से चली आ रही 'बुद्धों' की परम्परा है। ध्यान और योग तो वैदिक काल से भी पहले के संत, श्रमण, यतियों, मुनियों द्वारा प्रणीत पद्धतियां है। योग साधना तो बुद्ध परम्परा के वाहक नाथों, सिद्धों का गौरव है।

अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक शंकर ने तो बुद्ध को 'योगियों के चक्रवर्ती' कहकर गुणगान किया है। बुद्ध की महिमा एक महान योगी के रूप में उनके समय में ही बहुत प्रसिद्ध थी। वह बार बार भिक्षुओं व गृहस्थों को योग ध्यान के लिए प्रेरित करते थे। उनके बाद भी अनेक देशों में योग व योगियों की बहुत चर्चा रही। पालि भाषा में 'विशुद्धिमग्ग' नामक बड़ा ग्रंथ योग ध्यान साधना पर ही लिखा गया है। वज्रासन में ध्यान मुद्रा की बुद्ध प्रतिमा सबसे ज्यादा लोकप्रिय है।

सिद्धार्थ गौतम तो सात वर्ष की उम्र में ही खेत में जामुन के पेड़ के नीचे पहली बार ध्यान में लीन हो गए थे। संसार में दुख का कारण और उसके निवारण का मार्ग खोजने के लिए जब घर छोड़ा। कोसल में आलार कालाम और मगध के उद्दक रामसुत्त जैसे आचार्यों से ध्यान योग सीखा था। लेकिन जिस उद्देश्य के लिए वह निकले थे वह पूरा नहीं हो रहा था। उनसे सिद्धियां व चमत्कार सीखा, ध्यान की कुछ अवस्थाएं भी सीखी थी लेकिन वे मानव कल्याण के लिए उपयोगी नहीं थी।

फिर सिद्धार्थ ने भूख प्यास से शरीर को सूखा देने वाली कठोर तपस्या भी की लेकिन उससे उल्टा नुकसान हुआ। उसे भी छोड़ कर मध्यम मार्ग अपनाया। आखरि में बोधि वृक्ष के नीचे सात सप्ताह की साधना द्वारा संसार का सत्य जाना, दुख निवारण की सम्यक संबोधि प्राप्त की और वह ज्ञान ही मनुष्य की मुक्ति का मार्ग था। जीवन भर मानव के दुख को दूर करने, भवचक्र से मुक्ति और निर्वाण प्राप्ति का मार्ग बताया।

दरअसल 'योग ध्यान' का अर्थ होता है जोड़ना, जुड़ना। मनुष्य का स्वयं से जुड़ना। भीतर की ओर मुड़ना। बाहर भटकने की बजाए स्वयं के अंदर झांकना ,मन को वश में करना, चित्त को एकाग्र कर शुद्ध करना. क्रोध मोह लोभ द्वेष आदि विकारों को दूर कर चित्त को निर्मल करने की इस साधना द्वारा दुखों से मुक्ति पाना और जीवन में सुख शांति का उजियारा फैलाना। यही योग साधना है। यही विपस्सना ध्यान साधना समाधि है, यही सच्चा योग है और ऐसे मार्ग के राही ही श्रमण, योगी, साधक कहलाते हैं। यही गोरख, कबीर, रैदास, नानक का मार्ग है।

तथागत ने योग ध्यान पर बहुत महत्व दिया है।वह कहते हैं-

योगा वे जायती भूरि अयोगा भूरि सङ्ख्यो।
एतं द्वेधापथं ञत्वा भवाय विभवाय च।
तथ 'त्तानं निवेसेय्य तथा भूरि पवड्ढति
।।.. धम्मपद

अर्थात योग के अभ्यास से प्रज्ञा (wisdom) में वृद्धि होती है और अभ्यास नहीं करने से प्रज्ञा की हानि होती है। इसलिए मनुष्य अपनी प्रगति और पतन के इन दोनों मार्गों को अच्छी तरह जान कर स्वयं को ऐसी योग ध्यान समाधि में लगावें ताकि प्रज्ञा की निरंतर वृद्धि हो।

प्रज्ञा का अर्थ है अंतर्दृष्टि, विवेक, असाधारण ज्ञान जिससे संसार की सच्चाई का बोध होने से मन में किसी वस्तु या प्राणी की प्रति आसक्ति नहीं रहती है, तृष्णा का नाश होता है। शील, समाधि और प्रज्ञा ही बुद्ध का मार्ग है। और इन तीनों का जोड़ ही मुक्ति का अष्टांगिक मार्ग है। यही जोड़, योग है।

भगवान बुद्ध के बाद कुमारजीव और बोधिधर्म जैसे सैकड़ों भिक्षुओं ने भारतीय संस्कृति की इस गौरवशाली परम्परा को पूरे एशियाई देशों में खूब फैलाया। इस अनमोल विद्या को पाने के लिए वर्षों की जोखिम भरी यात्रा कर विश्व के विद्यार्थी तक्षशिला व नालंदा आते थे। आज जुड़ो, मार्शल आर्ट आदि रुप में शरीर के स्वास्थ्य सुरक्षा व ज्ञान (ध्यान) साधना मन की एकाग्रता व शुद्धि के लिए वहां खूब प्रसिद्ध है।

भारत में भी अलग अलग मान्यताओं के लोगों ने बुद्ध से पहले की व बुद्ध की खोजी योग साधना को अपनाया लेकिन उसमें कोई काल्पनिक शक्ति, मंत्र, प्रार्थना, संप्रदाय आदि को ठूंस कर खुद का ठप्पा लगा दिया। उपनिषदों में भी अष्टांग योग का विवरण है जिनमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार , धारणा, ध्यान और समाधि शामिल हैं।

योग, योग-सूत्र व इसके प्रणेता के बारे में आजकल जो दावे किए जाते है वह सब बुद्ध के बाद की रचनाएं हैं जो मौलिक न होकर सिर्फ संकलन है। जिनमें बुद्ध के धम्म की ध्यान साधना की अधिकतर बातें ज्यों की त्यों रखी गई है। खास बात यह है कि वहां भी योग ध्यान का उद्देश्य चित्त की निर्मलता ही है। लेकिन आजकल के कमाई के योग में मन की शुद्धि, चित्त की निर्मलता पर जोर नहीं दिया जाता है बल्कि शरीर की कसरत द्वारा शरीर को मोड़ने, मरोड़ने, पेट पिचकाने और सांस को धोंकनी की तरह चलाने को ही योग मान लिया जाता है।

निसंदेह कसरत से शारीरिक लाभ होता है लेकिन मानसिक शुद्धि नहीं। और मन की शुद्धि के बिना मनुष्य का कल्याण नहीं। यदि शारीरिक रूप से स्वस्थ व बलवान व्यक्ति के मन में क्रोध, मोह, लोभ, घृणा आदि विकार भरे हुए हैं तो उससे स्वयं का और समाज का भला नहीं होगा, हानि ही होगी। लेकिन संतों, मुनियों, बुद्धों की योग साधना का मकसद संपूर्ण मानव जगत को दुखों से मुक्त कराना और सुख शांति के उजियारे से जगत को रोशन करना है। ऐसे योग के जनक भगवान बुद्ध को वंदन।

भवतु सब्बं मंगलं.. सबका मंगल हो..
सभी प्राणी सुखी हो
आलेख: डॉ. एम एल परिहार, जयपुर
9414242059

शक्ति

रामकृष्ण के पास एक आदमी आया। रामकृष्ण से कहा कि तुमको लोग परमहंस कहते हैं, अगर असली परमहंस हो तो आओ मेरे साथ, गंगा पर चल कर दिखाओ!

रामकृष्ण ने कहा कि नहीं भाई, मैं पानी पर नहीं चल सकता। अगर परमात्मा ने मुझे पानी पर चलने के लिए बनाया होता, तो मछलियों जैसा बनाया होता।4 उसने जमीन पर चलने के लिए बनाया। उसके इरादे के विपरीत मैं नहीं जा सकता। मगर मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूं कि कितना समय लगा तुम्हें पानी पर चलने की यह कला सीखने में ?

उसने कहा, अठारह साल तपश्चर्या की है! कठिन तपश्चर्या की है! खड्ग की धार पर चला हूं। तब कहीं यह शक्ति हाथ लगी है, यह कोई यूं ही हाथ नहीं लग जाती।

रामकृष्ण कहने लगे, अठारह साल तुमने व्यर्थ गंवाए। मुझे तो जब भी गंगा के उस तरफ जाना होता है तो दो पैसे में मांझी मुझे पार करवा देता है। तो अठारह साल में तुमने जो कमाया उसकी कीमत दो पैसे से ज्यादा नहीं है। शक्ति की जरूरत क्या है ? शक्ति की आकांक्षा मूलत: अहंकार की आकांक्षा है। क्या करोगे शक्ति का ? लेकिन तप करने वाले लोग इसी आशा में कर रहे हैं तप। सिर के बल खड़े हैं, चारों तरफ आग जला रखी है, नंगे खड़े हैं, भूखे खड़े हैं, इसी आशा में कि किसी तरह शक्ति को पा लेंगे। मगर शक्ति किसलिए? शक्ति तो पोषण है अहंकार का। कोई धन पाने में लगा है, वह भी शक्ति की खोज कर रहा है। और कोई राजनीति में उतरा हुआ है, वह भी पद की खोज कर रहा है, पद शक्ति लाता है। और कोई तपश्चर्या कर रहा है, मगर इरादे वही। इरादों में कोई भेद नहीं।

तुम्हारे धार्मिक, अधार्मिक लोग बिलकुल एक ही तरह के हैं। चाहे दिल्ली चलो, यह उनका नारा हो, और चाहे गोलोक चलो;

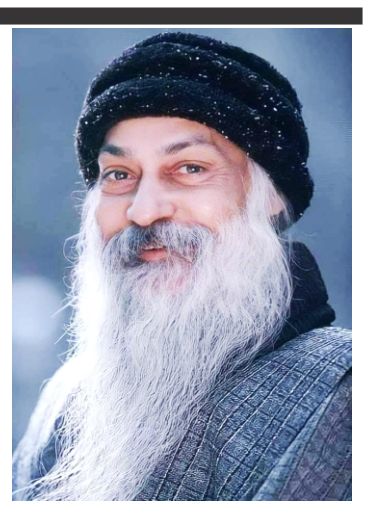

मगर दोनों की खोपड़ी में एक ही गोबर भरा है शक्ति चाहिए। क्यों ? क्या करोगे शक्ति का ? चमत्कार दिखलाने हैं!

ओशो
राम नाम जान्यो नहीं-(प्रवचन-03)

बी-फार्मेसी के लिए आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाकर किया 17 जुलाई

बी-फार्मेसी का ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस टेस्ट 24 से 28 जुलाई को होगा आयोजित

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, हरियाणा स्टेट टेक्निकल एजुकेशन सोसाइटी (एचएसटीईएस) की ओर से बी-फार्मेसी (शैक्षणिक सत्र 2023-2024) के लिए ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (ओसीईटी) अब 24 से 28 जुलाई को आयोजित होगा। इस टेस्ट के लिए आवेदन की अंतिम तिथि को आगे बढाकर 17 जुलाई कर दिया गया है। हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा समिति की ओर से यह जानकारी देते हुए बताया गया है कि फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथमेटिक्स अथवा बायोलॉजी के साथ 12वीं पास करने वाले छात्र इस कोर्स के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए छात्र वेबसाइट एचएसटीईएस.ओआरजी.इन पर विजिट कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पंजीकरण के लिए टीचएडमिशनएआरवाई.जीओवी.इन वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर किया जा सकता है। बी-फार्मेसी कोर्स से संबंधित अन्य जानकारियां भी इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा समिति की ओर से दी जानकारी दी गई है कि छात्र आवेदन करते समय सटीक और संक्षिप्त में जानकारी दें और अपना मोबाइल नंबर भी लिंक करवा दें। ऐसा करने से छात्रों को काउंसलिंग और प्रवेश परीक्षा के दौरान परेशानी नहीं होगी। दाखिला लेने वाले सभी

इच्छुक छात्रों का नाम, आरक्षण श्रेणी, आय एवं अन्य विवरण परिवार पहचान पत्र से सत्यापित किए जाएंगे। इस बारे में छात्रों से परिवार पहचान पत्र आईडी को अपडेट और प्रमाणित करवाने की सलाह दी गई है।

श्रमिकों के कल्याण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही है पितृत्व लाभ योजना

योजना के तहत श्रमिक को अपनी पत्नी व बच्चे के पालन–पोषण के लिए प्रदान की जाती है 21 हजार की वित्तीय सहायता

योजना का लाभ लेने के लिए पंजीकृत श्रमिक को एचआरवाईलेबर.जीओवी.इन पर करना होगा आवेदन

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेश के श्रमिक वर्ग की भलाई के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं में असंगठित क्षेत्र के पंजीकृत श्रमिकों के लिए हरियाणा पितृत्व लाभ योजना चलाई जा रही है। भवन एवं निर्माण असंगठित श्रम कल्याण बोर्ड की ओर से यह योजना चलाई जा रही है। जिसके तहत असंगठित क्षेत्र के सभी पंजीकृत श्रमिकों के बच्चों के जन्म पर 21 हजार रुपए की वित्तीय सहायता दी जाती है।

उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कहा कि इस योजना का लाभ लेने के लिए असंगठित वर्ग के श्रमिकों को अपना पंजीकरण करवाना होगा। पंजीकरण करवाने के बाद हरियाणा पितृत्व लाभ योजना के लिए आवेदन किया जा सकता है। इसके लिए श्रम विभाग की अधिकारिक वेबसाईट एचआरवाईलेबर.जीओवी.इन पर आवेदन करना होगा। यह योजना हरियाणा के पंजीकृत श्रमिकों के परिवार की भलाई के लिए है। एक श्रमिक के परिवार में शिशु जन्म पर पत्नी और संतान को अच्छा स्वास्थ्य और बेहतर खानपान मिल सके, इसी के लिए उसको 21 हजार रूपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इससे गरीब श्रमिक के बच्चे और पत्नी को भी बेहतर पोषण मिल सकेगा। सामान्य स्थिति में बहुत से श्रमिकों के लिए अपने परिवार को संतान जन्म पर अच्छी खुराक देना मुश्किल होता है। राज्य सरकार की इस पितृत्व लाभ योजना के सहारे

श्रमिक को अपनी पत्नी और संतान के भरण–पोषण के लिए अनुदान प्राप्त होगा। जिससे उनका स्वास्थ्य सुरक्षित रहेगा तथा मां व बच्चे की सेहत दुरूस्त रहेगी।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के सच्चे सेनानी तथा सहयोगी लाहौरी राम बाली का निधन

गजब हरियाणा न्यूज

जालंधर । साहब का 6 जुलाई को पंजाब के जालंधर में निधन हुआ। वो 94 साल के थे, उनके द्वारा अम्बेडकरवादी आंदोलन पर कई किताबे प्रकाशित हुई। वे पिछले 50 साल से ज्यादा वक्त से 'भीम पत्रिका' प्रकाशित कर रहे हैं। उनकी रंगीला गांधी यह किताब काफी चर्चा में रही। समता सैनिक दल को देशव्यापी बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने आर.पी.आई के नेता के रूप में काम किया। आज हम जो बाबासाहेब के लिखे को हर भाषा में पढ़ सकते हैं, (डॉ. अम्बेडकर वांग्मय), जिसने करोड़ों लोगों के जिंदगियों बदला, उसको सरकार से प्रकाशित करवाने के लिए आंदोलन करने वाले शख्स का नाम एल.आर बाली ही है। एल.आर. बाली साहब लगभग 6 साल तक बाबासाहेब के संपर्क में रहें। उन्होंने समाज के उन्नति के लिए अपना समूचा जीवन समर्पित किया। ऐसे महान योद्धा को विनम्र अभिवादन।

सुरेश द्रविड़ के खिलाफ दर्ज एफआइआर रद्ध करवाने व अन्य मांगों को लेकर आयोग के चेयरमैन को सौंपा मांगपत्र

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

पंचकुला, बहुजन समाज वेल्फेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष रोहताश मेहरा एवं बहुजन स्टूडेंट वेल्फेयर एसोसिएशन इंडिया बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष अमन जांगड़ा ने अनुसूचित जाति आयोग हरियाणा के चेयरमैन डॉ रविन्द्र बलियाला से उनके कार्यालय में मुलाकात की और उनको एक मांगपत्र सौंपा गया जिसमें मांग की गई कि कैथल पुलिस द्वारा थाना शहर कैथल में सुरेश द्रविड़ के खिलाफ 2022 में दर्ज की एफआईआर नंबर–508 को रद्ध किया जाए, कौशल रोजगार योजना में आरक्षण व्यवस्था को लागू किया जाए, सभी प्राइवेट कालेजों को युनिट मानकर नियुक्तियां निकाली जाए तथा रोस्टर रजिस्टर को मेनटेन करते हुए पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के युवाओं को उनका उचित प्रतिनिधित्व दिया जाए, हरियाणा में खाली पड़ा बैकलाग शीघ्र भरा जाए, पदोन्नति में आरक्षण लागू करके उचित प्रतिनिधित्व में सभी पदों पर भर्तियां कि जाए, अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग के छात्रों को बकाया पिछले वर्षों की छात्रवृत्ति का शीघ्र भूगतान किया जाए । इसके अलावा इस वर्ष की छात्रवृत्ति भी शीघ्र जारी किया जाए, सरकारी और गैरसरकारी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में जीरो फीस पर दाखिले किए जाए, चिराग योजना को तत्काल प्रभाव से रद्द किया जाए, अनुसूचित जाति वर्ग को दिए गए 100–100 वर्ग गज के प्लांटों पर शीघ्र कब्जा दिलवाया जाए, हर गांव में शिक्षा के स्तर को बढाने के लिए ई लाईब्रेरी चालू की जाए।

चेयरमैन डॉ रविन्द्र बलियाला ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि सुरेश द्रविड़ के खिलाफ दर्ज एफआईआर पर जल्द ही रद्द करवा दी जाएगी और अन्य मांगों के संबंध में हरियाणा सरकार के संबंधित विभागों से बातचीत करके शीघ्र ही समाधान किया जाएगा। प्रतिनिधिमंडल में सुरेश द्रविड़, विक्रम थाना, मनोज बौद्ध आदि भी शामिल रहे।

जय नारायण खटक बने निर्विरोध श्री कबीर धानक समाज धर्मशाला एवं छात्रावास सभा के प्रधान

जगदीश इंदौरा को उप – प्रधान, नरेंद्र को महासचिव, सुनील कुमार को कोषाध्यक्ष तथा जगदीश लडवाल को सह सचिव भी चुना निर्विरोध

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, श्री कबीर धानक समाज धर्मशाला एवं छात्रावास सभा कुरुक्षेत्र का तीन वार्षिक चुनाव 2023– 26 सभा के मुख्यालय बिमला हाउस, गांव कलाल माजरा, नजदीक सेक्टर 30 कुरुक्षेत्र में 9 जुलाई को आयोजित किया गया। उपस्थित सदस्यों को सभा के कैशियर ने गत वर्षो का लेखा जोखा प्रस्तुत किया और सभा के सदस्यों ने गत वर्ष के लिखा जोखा के विवरण को संतोषजनक माना। अगले सत्र 2023– 26 के लिए पहले से नियुक्त किए गए चुनाव अधिकारी हेमराज खटक ने चुनाव प्रक्रिया आरंभ करते हुए सभा को बताया कि मुझे जो पंजीकृत सदस्यों की सूची प्राप्त हुई है उसके अनुसार चुनाव प्रक्रिया पूरी की है। जिसमे सभा के पंजीकृत सदस्यों में से जयनारायण खटक ने प्रधान पद हेतु जगदीश इंदौरा ने उप – प्रधान, नरेंद्र ने महासचिव, सुनील कुमार ने कोषाध्यक्ष तथा जगदीश लडवाल ने सह सचिव पद हेतु अपने–अपने आवेदन प्रस्तुत किए। इसके अलावा किसी भी अन्य सदस्य ने किसी भी पद के लिए आवेदन नहीं किया, इसलिए जय नारायण ख टक को प्रधान, जगदीश इंदौरा उप – प्रधान, नरेंद्र को महासचिव, अनिल कुमार को कोषाध्यक्ष तथा जगदीश लडवाल को सह सचिव पद पर निर्विरोध विजेता घोषित किया गया। इस अवसर पर सभा की कार्यकारिणी हेतू भी उपस्थित सदस्यों ने अपने पंजीकृत सदस्य मेद कुमार को सलाहकार, सतपाल व रजनीश कुमार को सदस्य कार्यकारणी सदस्य मनोनीत किया गया। सभा के नवनियुक्त पदाधिकारीगण को शीघ्र ही गोपनीयता की शपथ दिलाई जाएगी। चुनाव की प्रक्रिया सभा के सविधान अनुसार गत 2 जून से आरंभ हुई थी। जिसे चुनाव अधिकारी हेमराज खटक ने निष्ठापूर्वक एवं निष्पक्षतापूर्वक संपन्न

करवाया और नियमानुसार जयनारायण खटक को प्रधान, जगदीश इंदौरा को उप – प्रधान, नरेंद्र को महासचिव, सुनील कुमार को कोषाध्यक्ष, जगदीश लडवाल को सचिव पद पर निर्विरोध विजेता घोषित किया। सभा ने चुनाव अधिकारी हेमराज खटक का निष्पक्षतापूर्वक चुनाव कराने पर आभार व्यक्त किया।

भाजपा की जनविरोधी एवं कांग्रेस की जनकल्याणकारी नीतियों को जनता को बताएं कांग्रेस कार्यकर्ता : कुमारी शैलजा

गजब हरियाणा न्यूज/पूर्ण सिंह

अम्बाला । राहुल गांधी देश के जनप्रिय नेता है भाजपा सरकार तानाशाही रवैया अपनाकर उनकी लोकसभा सदस्यता रदद् कर उनकी आवाज को दबा नही सकती। हमारे नेता राहुल गांधी के खिलाफ भाजपा द्वारा षड्यंत्र रचा गया और उनकी सदस्यता रद्द की गई। ये बात अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी महासचिव एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी शैलजा ने साहा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करते हुए कही।इस दौरान मुलाना विधायक वरुण चौधरी भी मौजूद रहे।

कुमारी शैलजा ने कहा राहुल गांधी जी गरीब, मजबूर हर वर्ग की आवाज उठा रहे है देश की जनता का भरपूर समर्थन उनके साथ है। इसलिए सरकार उन्हें रोकने के लिए हर हथकंडा अपना रही है।

कुमारी शैलजा ने सम्मेलन के माध्यम से भजापा सरकार की जनविरोधी नीतियों और कांग्रेस पार्टी की जनकल्याणकारी नीतियों के साथ श्री राहुल गांधी जी के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने और कांग्रेस पार्टी को बूथ स्तर पर

मजबूत करने की बात कांग्रेस कार्यकर्ताओं को कही ।ताकि कांग्रेस की सरकार बनने पर देश व प्रदेश फिर तरक्की की राह पर अग्रसर हो।

विधायक वरुण चौधरी ने सभा को संबोधित करते हुए भाजपा सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि इस सरकार अपने राज के 9 सालो में देश व प्रदेश में कुशासन देने का काम किया है।आज कोई भी व्यक्ति भाजपा ।सरकार से खुश नहीं है। आज इस सरकार में किसान, गरीब,व्यपारी, कर्मचारी, युवा सभी वर्ग परेशान है।आज जरूरतमंद लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं पहुंचता हैं।

विधायक ने किसान हित में बात करते हुए कहा है कि आज छोटी–छोटी बात को लेकर किसान सड़कों पर आने को मजबूर हैं लेकिन सरकार उनकी बात और सुनने की बजाय किसानों पर लाठियां बरसाती है। इस सरकार में शिक्षक,नर्स,आशा वर्कर,पंचायत प्रतिनिधियों,युवाओं पर भी लठिया भांजी गई।प्रदेश में बेरोजगारी सभी प्रदेशों से सबसे अधिक हमारे हरियाणा में है। प्रदेश का युवा बेरोजगार है। आज बढ़ती महंगाई से जनता त्रस्त हैं। महंगाई के इस दौर में हर वर्ग के लिए घर चलाना मुश्किल हो गया है।

इस दौरान पुर्व उपमुख्यमंत्री चंद्रमोहन बिश्नोई,हरियाणा कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष रामकिशन गुज्जर, कालका से विधायक प्रदीप चौधरी के अन्य कांग्रेस पदाधिकारी एवं हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

English Grammar : Use of Articles (A, AN, THE, X--No Article)

Part-1
Fill in the blanks (with answers) :-

1. ..(The)..... Lal Quila is ....(a)... historical building.

2. ...(The).... Cotton of Gujarat is not available here.

3. Aditi saw ...(a)..... one-eyed bird on a tree.

4. Sourabh is ....(an)..... N.C.C. cadet.

5. ...(X)... Cotton is a precious crop.

6. Nikhil reads ....(the)..... Tribune, daily.

7. .....(X).... Kalidas was ....(the).... Shakespeare of Sanskrit.

8. Gandhiji always spoke ....(the)..... truth.

9. Once there was ....(a)..... crow. One day .....(the)..... crow was thirsty.

10. Lata gave ....(an).... orange and ....(a).... banana to Vidhi.

11. All her friends are ....(X).... intelligent.

12. .....(The)... Rajdhani express is late by half ....(an)..... hour.

13. He purchased ....(the).... best book on English Grammar.

14. His father is ....(an)..... M.P. and his sister is ....(an)..... M.Sc.

15. ....(The).....Sun rises in .....(the).... East.

16. ...(X)..... Ram and .....(X).... Ravan fought a war.

Dr Ranjit Singh Fuliya

हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र
गजब हरियाणा

सतगुरु ही जीता जागता परमात्मा : स्वामी ज्ञाननाथ
सुख और आनंद मे जमीन आसमान का अंतर : महामंडलेश्वर

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला ।निराकारी जागृति मिशन नारायणगढ के गद्दीनशीन चेयरमैन और संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री.श्री.1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञान नाथ ने सत्संग के दौरान रुहानी प्रवचनो मे कहा यह भलिभांति समझ लेना चाहिए कि संसार और निराकार दोनो नही एक मिलेगा। जैसे एक म्यान मे दो तलवारें नहीं रह सकती ठीक इसी प्रकार से अतःकरण मे संसार और निराकार दोनो नही रह सकते। क्योंकि जहां दो है वहां पर द्वैत तथा मन और मत का भेदभाव होता है। अब यह फैसला जीव को करना है कि संसार चाहिए या फिर निराकार चाहिए। अगर आप इस मृत्यु लोक की यश-मान, कीर्ती, सुख, वैभव और वाहावाही चाहते हो तो फिर प्रियतम पिता परमात्मा के सम्राज्य मे आपको कोई जगह नही मिलेगी और अगर आप जीते जी इस ओत-प्रोत एकरस, कायम दायम जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार परमात्मा से और इसके साक्षात प्रतिनिधि समय के ब्रह्मवेता सतगुरु से प्रेम-प्रीती, प्यार करके एकरूप होना चाहते हो तो फिर आपको इन सब सांसारिक नाशवान वस्तुओं और रिश्ते-नातों के मोहपाश से और जकड़ पकड से हाथ धोने पडेंगे और पूर्ण समर्पित और शरणागत भाव से अपना पूरा ध्यान समय के आत्मदर्शी सतगुरु के पावन श्री चरणों मे लगाना होगा, उनके आदेश-उपदेश की अनुपालना करनी होगी और उनकी हर बात पर फूल चढाने होगे तभी वास्तविकता प्रकट होगी और जीवन मे स्थाई आत्मिक सुख-आनंद और मोक्ष मुक्ति कि सपना साकार होगा। महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने कहा कि सुख और आनंद मे जमीन आसमान का अंतर होता है यानि कि सुख इन्द्रियों से ग्रहण किया जाता और वह क्षणिक होता है और आनंद आत्मिक होता है जो एक बार प्राप्त हो गया फिर हमेशा ज्यों-का-त्यों बरकरार रहता है। महामण्डलेश्वर सतगुरु स्वामी ज्ञान नाथ ने कहा कि समय के ब्रह्मज्ञानी सतगुरु के मुख मे ब्रह्म यानि कि शब्द प्रकट होता है। अपनी मौज मे जो सतगुरु कह देता है वह सच साबित हो जाता है। किसी कारणवश जब हम सतगुरु से दूर हो जाते हैं तब उनके नजदीक होने के कीमती क्षणों का पता चलता है और अनायास ही याद सताती रहती है। सतगुरु से दूरियां एहसास कराती है की सतगुरु से नजदीकियां कितनी कीमती थी। परमात्मा की रहमत का पात्र बनने के लिए उनके साक्षात स्वरुप प्रतिनिधि समय के सतगुरु का रहमोकर्म बहुत जरूरी है। हमारा सतगुरु ही जीता जागता परमात्मा है। सतगुरुदेव की रहमत से अंतःकरण निर्मल होता है और परम तत्व का बाखूबी पलभर मे खुली और बंद आंखे करके दर्शन-दीदार होता है और अंदर बाहर का रुपांतरण होता है जीवन मंगलमय होता है, लौकिक और आलौकिक जीवन सफल होता है। इसलिए सबसे पहले आतमवेता सतगुरु फिर परमात्मा, पहले वर्णनातमक नाम फिर धुनात्मक नाम अर्थात दिव्य शब्दधुन, दिव्य ज्योति, दिव्य प्रकाश और अंततः मालिकेकुल खण्डों-ब्रहाणडों अनेकों लौकिक और आलौकिक नियामतों का मालिक, जीवन का मूल आधार कण-कण मे रसा और बसा हुआ सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा।

दसवीं, बारहवीं व स्नातक की कक्षाओं में मेरिट प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मिलेंगी छात्रवृत्ति : शांतनु

अंबेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के तहत 31 जनवरी 2024 तक कर सकते है आवेदन, ग्रामीण क्षेत्र में 60 फीसदी व शहरी क्षेत्र में 70 फीसदी अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी है योजना के पात्र

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कहा कि हरियाणा सरकार के अनुसूचित एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग ने डा. भीमराव अंबेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के लिए आवेदन करने की तारीख अब 31 जनवरी 2024 तक बढ़ा दी गई है। डा. भीमराव अम्बेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना में दसवीं, बारहवीं व स्नातक कक्षाओं में मेरिट प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसार अंक प्रतिशत के आधार पर ये स्कॉलरशिप दी जाती है।

उपायुक्त शांतनु शर्मा ने बातचीत करते हुए कहा कि अनुसूचित वर्ग में शहर के विद्यार्थी को दसवीं कक्षा में 70 प्रतिशत अंक व ग्रामीण विद्यार्थी को 60 प्रतिशत अंक लेने पर 8 हजार रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। बारहवीं कक्षा में 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक लाने वाले शहरी छात्र या छात्रा को 8 से 10 हजार रुपए दिए जाएंगे। ग्रामीण विद्यार्थी के लिए 70 प्रतिशत अंक लाने जरूरी है। एससी श्रेणी में स्नातक कक्षा के शहरी छात्र को 65 प्रतिशत व ग्रामीण विद्यार्थी को 60 प्रतिशत अंक लाने के लिए 9 से 12 हजार रुपए की राशि स्कॉलरशिप के तौर पर दी जाती है। मैट्रिक में मेरिट लाने वाले विद्यार्थियों को 8 हजार रुपए की स्कॉलरशिप दी जाती है।

उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग ए के लिए शहर व गांव के हिसाब से दसवीं कक्षा में 70 प्रतिशत व 60 प्रतिशत तथा पिछड़ा वर्ग बी में यही शर्त 80 प्रतिशत व 75 प्रतिशत रखी गई है। अन्य वर्ग में भी शहरी छात्र को दसवीं कक्षा में 80 प्रतिशत व ग्रामीण विद्यार्थी को 75 प्रतिशत अंक लाने जरूरी है। आवेदन के लिए शैक्षणिक प्रमाण पत्र, रिहायशी प्रमाण पत्र,चार लाख रुपए से कम वार्षिक आय का प्रमाण पत्र, बैंक पास बुक, जाति प्रमाण पत्र आदि दस्तावेज संलग्न किए जाने आवश्यक है। छात्र अपने आवेदन सरलहरियाणा.जीओवी.इन पर 1 जुलाई 2023 से लेकर 31 जनवरी 2024 तक कर सकते है।

अब दूसरा बच्चा लडका होने पर भी कामगार महिला को मिलेंगे पांच हजार रूपए :डीसी
तीन की जगह दो किस्तों में होगा सहायता राशि का भुगतान

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर । हरियाणा सरकार ने नियमों में बदलाव कर कामगार महिलाओं को सुविधा प्रदान करने का अहम कदम उठाया है। अब हरियाणा में कामगार महिलाओं को दूसरा बच्चा लडका होने पर भी प्रदेश सरकार की योजना के तहत 5 हजार रूपए मिलंगे। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के कुशल मार्गदर्शन व महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री कमलेश ढांडा के नेतृत्व में महिला एवं बाल विकास विभाग ने गर्भावस्था के दौरान हुए मजदूरी के नुकसान की भरपाई व स्तनपान कराने वाली महिलाओं में पोषण सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना शुरू की है।

डीसी राहुल हुड्डा ने सरकार की योजना की जानकारी देते हुए बताया कि पिछले साल 8 मार्च के बाद दूसरे बच्चे के रूप में लडके को जन्म देने वाली अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाएं इस योजना का लाभ उठा सकेंगी। इस संबंध में महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आदेश जारी कर दिए गए हैं और 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांग महिलाओं सहित मनरेगा जॉब कार्ड, ई श्रम कार्ड, बीपीएल राशन कार्ड, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना और किसान सम्मान निधि की लाभार्थी महिलाएं योजना का लाभ लेने के लिए पात्र होंगी। योजना का लाभ लेने के लिए संबंधित महिला के परिवार की सालाना आय 8 लाख रुपए से अधिक नहीं होनी चाहिए। इस योजना के लिए आधार कार्ड अनिवार्य है।

डीसी ने बताया कि केंद्र या राज्य सरकार की नौकरियों और सार्वजनिक उपक्रमों में तैनात महिला कर्मचारी योजना का लाभ लेने के लिए पात्र नहीं होंगी। सहायता राशि लेने के लिए गर्भावस्था के पंजीकरण के बाद कम से कम एक बार प्रसव पूर्व जांच के साथ ही बच्चे का पंजीकरण और उसे

बीसीजी, ओपीवी, डीपीटी और हेपेटाइटिस बी के टीके लगवाना जरूरी है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना का लाभ लेने के लिए आंगनवाड़ी वर्कर या आशा के माध्यम से आवेदन किया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई कामगार महिलाओं के लिए पहले से प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना संचालित की जा रही है, जिसके तहत पांच हजार रुपए की सहायता राशि तीन किस्तों में दी जाती थी। प्रथम किश्त में एक हजार रुपए, दूसरी किस्त में दो हजार रुपए और बच्चे के जन्म का पंजीकरण होने व प्रथम सत्र का टीकाकरण पूरा होने पर तीसरी किस्त में दो हजार रुपए मिलते थे। सरकार द्वारा नियमों में बदलाव कर सहायता राशि दो किस्तों में देने का निर्णय लिया है। अब प्रथम किस्त के रूप में तीन हजार रुपए प्रसवपूर्व कम से कम एक जांच होने पर और दूसरी किस्त दो हजार रुपए बच्चे के जन्म का पंजीकरण व बच्चे के प्रथम चक्र का टीकाकरण पूरे होने पर मिलेंगे।

अनूप कुमार चोपड़ा ने दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर, डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य अनूप कुमार चोपड़ा ने विद्यालय में पौधारोपण किया जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना तथा शुद्ध पर्यावरण के लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा एक पौधा लगाकर अपना सहयोग देने के लिए प्रेरित करना है। विद्यालय के प्रधानाचार्य अनूप कुमार चोपड़ा ने कहा कि समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए ऐसे प्रयास समाज में जागरूकता एवं उत्साह भरते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपने पर्यावरण

को साफ-सुथरा एवं सुरक्षित रखने के प्रति कुछ जिम्मेदारी बनती है जिसे हर एक व्यक्ति को निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह अपनी ओर से इस दिशा में हमेशा प्रयासरत रहेंगे और कोशिश करेंगे कि एक पौधा हर माह अवश्य लगाएं।

प्रदेश को आपदा ग्रस्त घोषित करे सरकार : जयहिंद

गजब हरियाणा न्यूज/पूर्ण सिंह

बराडा, जयहिन्द सेना के अध्यक्ष नवीन जयहिंद सावन मास के पहले सोमवार को अनेक भोले के भक्तों के साथ हरिद्वार हर की पौडी से बेरोजगार रांडे कांवड लेकर बराडा पहुंचे नवीन जयहिंद ने कहा कि वह सरकार को सद्बुद्धि दिलाने व नकारा सरकार से लड़ने की शक्ति पाने के लिए हरिद्वार से रोहतक तक बेरोजगार रांडे पेंशन कांवड ला रहे हैं।

बारिश के कारण प्रदेश में बाढ जैसे हालात पैदा हो गए है। क्षेत्र को बाढग्रस्त घोषित किया जाये। उन्होंने कहा कि सरकार या प्रशासन इस दिशा में भले ही कदम ना उठाये लेकिन प्रकृति का शोषण करने वाले लोगो को प्रकृति ने जवाब दे दिया है। उन्होंने कहा कि लेकिन विडंबना इस बात की है कि शासन-प्रशासन अभी भी इस बात को समझ नहीं रहा है जिसका भविष्य में विपरीत परिणाम भुगतना पड सकता है।

यह सारा का सारा सिस्टम भ्रष्टाचार की नींव पर टिका हुआ है। जिस तरह से यहां बाढ की स्थिति है उससे पता चल गया है कि यहां सीवरेज सिस्टम व पानी की निकासी का सिस्टम बिल्कुल फेल है। यह सब इंसान द्वारा किए शोषण के खिलाफ प्रकृति की बगावत है जिसकी वजह से आज ये हालात पैदा हुए है।

जयहिन्द ने बताया कि यमुना नदी में पानी ज्यादा होने से जो आपदा यहां आई हुई है। मैं प्रार्थना करूंगा कि भगवान भोले नाथ उनकी रक्षा करें। जयहिन्द ने कहा कि यह सरकार बेरोजगारों को रोजगार देने की बजाय रांडा बनाना चाह रही है। वहीँ बढ़ती महंगाई ने लोगो की कमर तोड़ रखी है और लोगों की रसोई में राशन नही है। हरियाणा में 10 लाख बेरोजगार युवा नौकरी लेने के लिये लाइन में खड़े है। लेकिन युवाओ को नौकरी नही लेकिन नशा मिल रहा है

जिसको सरकार रोक लगाने में नाकाम रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार शराब के ठेके खोलने पर ज़ोर दे रही है लेकिन इस सरकार के शासन में स्कूल और कॉलेज बंद हो रहे है। इस अवसर पर मोहित शर्मा, अंकुश समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

सौर ऊर्जा पंप सेट 75 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध

गजब हरियाणा न्यूज/पूर्ण सिंह

अम्बाला, अतिरिक्त उपायुक्त, अम्बाला विवेक भारती ने बताया कि नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा विभाग द्वारा हरियाणा किसानों को 3 से 10 हॉर्स पावर (एचपी) के सौर उर्जा पम्प 75 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध करवाए जा रहें हैं। उन्होंने बताया कि सरल हरियाणा पर 28 जून 2023 से 12 जुलाई 2023 तक ऑनलाईन आवेदन किए जा रहें हैं। इस बार किसानों को इस वर्ष के लक्षित लाभार्थियों का चयन परिवार की वार्षिक आय व भूमि धारण के आधार पर किया जाएगा। लक्षित लाभार्थी मूल्य निर्धारण के उपरान्त सूचिबद्ध कम्पनी का चयन करके लाभार्थी अपना हिस्सा केवल ऑनलाईन माध्यम द्वारा ही जमा करवा सकेगें। जिसकी सूचना उनके मोबाईल नम्बर/ विभाग की वैबसाईट पर उपलब्ध होगी। ऑनलाईन आवेदन हरियाणा सरकार के सरल पोर्टल saralharyana.gov.in पर ही किए जा सकते हैं। सौलर वॉटर पंम्पिग सिस्टम केवल उन्हीं किसानों को दिए जाएगें जो कि सान सूक्ष्म सिंचाई जैसे टपका सिचाई या फुवारा सिंचाई द्वारा सिंचाई करते हो और अपने खेत में जमीनी पाईप लाईन दबाकर सिंचाई करते हो। ऑनलाईन आवेदन के समय परिवार पहचान पत्र जिसमें मोबाईल नम्बर लिंक होना चाहिए। किसी भी प्रकार की समस्या के लिए अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय में परियोजना अधिकारी से सम्पर्क करें।

बसवा ने मनाया अपना 7वां स्थापना दिवस

रोहतास मेहरा ने अनुसूचित जाति आयोग के चेयरमैन डॉ रविंद्र सिंह बलियाला के समक्ष रखी मांगे

अनुसूचित जाति की मांगों को गंभीरता से ले प्रदेश सरकार:डॉ कपूर सिंह

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

नरवाना, बहुजन स्टूडेंट वेलफेयर एसोसिएशन इंडिया का 7वां स्थापना दिवस समारोह डॉ भीम राव अम्बेडकर भवन नरवाना में आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर अनुसूचित जाति आयोग हरियाणा के चेयरमैन डॉ रविन्द्र बलियाला व समाजसेवी एवं रिटायर्ड कार्यकारी अभियंता डॉ कपूर सिंह ने शिरकत कर संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बसवा संस्थापक रोहताश मेहरा ने की व मंच का संचालन गुरूदेव अम्बेडकर बडसीकरी ने किया।

रोहताश मेहरा ने अनुसूचित जाति आयोग के चेयरमैन के सामने एससी/एसटी एवं ओबीसी छात्रों की कई वर्षो से रुकी छात्रवृत्ति, अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग की बैकलॉक की खाली पड़ी सीटों को भरने, सभी सरकार से अनुदान प्राप्त स्कूल व कॉलेज में रोस्ट रजिस्टर को लागू करके खाली पड़ी अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग की सीटों को भरने, चिराग् योजना वापस लेने और अध्यापक सुरेश द्रविड़ पर दर्ज मुकद्दमा खारिज करवाने संबंधी मांगे रखी। जिला अध्यक्ष सुमित भारतीय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

चेयरमैन डॉ रविन्द्र बलियाला ने कहा कि वह मुख्यमंत्री के समक्ष उनकी मांगों को रखेंगे। हरियाणा सरकार ने अनुसूचित जाति के कर्मचारीयों के लिए प्रमोशन में आरक्षण देने का वादा किया है। बसवा टीम शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है। विशेष बात यह है कि आप सभी संगठन के कार्यकर्ता युवा है इस कार्यक्रम में सभी छात्र है। यह बड़ी बात है और जो बसवा टीम प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करके बच्चों के लिए मोटिवेशन का कार्य किया है वो काबिले तारीफ हैं।

डॉ कपूर सिंह ने आयोग के चेयरमैन डॉ रविंद्र सिंह बलियाला से कहा कि बसवा टीम ने बहुत अच्छी मांग रखी है जो समाज के हित में है। इसके लिए सरकार से सभी मांगो को पूरा करवाना चाहिए और इसके लिए हर कुर्बानी के तैयार भी रहना चाहिए। उन्होंने कहा बसवा टीम के लिए हर समय तन-मन-धन को सहयोग करूंगा। जो भी मेरी बसवा टीम डयूटी लगाएगी , तो वह हमेश तत्पर रहेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार को भी मांगों को गंभीरता से लेना चाहिए। समाज के युवा पढ़ाई लिखाई में अव्वल आ रहे हैं, उन्हें विशेष अवसर दिए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि समाजहित में ज्यादा से ज्यादा काम किए जाने चाहिए ताकि समाज तरक्की कर आगे बढ़ सके।

विशिष्ठ अतिथि मास्टर गोपाल कश्यप, पुष्पा दबलैन व मुख्य वक्ता संदीप सुरजाखेंडा ने कहा कि बसवा टीम के सभी कार्यकर्ता ईमानदारी के साथ गांव में खाली पड़ी चौपालों को पुस्तकालयों में बदलने का कार्य करते हैं । प्रदेश चैयरमैन विक्रम थाना व प्रदेश अध्यक्ष अमित बेलरखा ने कहा कि बसवा टीम इंडिया पिछले 7 सालों से शिक्षा प्रथम उद्देश्य पर काम कर रही है जिसके कारण बच्चों को नशा छोड़ो शिक्षा लो की नई पहल करके समाज को नशामुक्त करने की प्रेरणा दे रही है।

इन्होंने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

डॉ भीमराव अम्बेडकर व एपीजे अब्दुल कलाम पुस्तकालय कलायत, डॉ भीमराव अम्बेडकर पुस्तकालय उझाना बच्चों की टीम , शीतल आर.डी नरवानिया व अमित राठी ने कल्चर कार्यक्रम में अपनी अपनी प्रस्तुति देकर लोगों का मन मोह लिया।

185 बच्चों व समाजसेवियों को किया सम्मानित

इस अवसर पर प्रदेश सचिव मनोज बौद्ध, प्रदीप भारतीय, संदीप लोन,विकी लोन , कृष छात्तर , विकास, आर डी नरवानिया, गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा,चांदी राम बौद्ध,डॉ अम्बेडकर सभा के प्रधान जलि सिंह मुवाल, उप प्रधान कुलदीप बेलरखा, श्रवण ग्रोवर, महावीर रवि, बिक्रम लोन, पवना सीवन, गुरूनाम सिंह, सुशील छात्तत्र , संजीव राही, गुरदेव नरवाना, हरपाल पिज्जुपुरा, मंदीप सिमला , जोगिंदर करसिंन्दू, अमित मुवाल , मनीष कश्यप, गुरजेट राठी, आनन्द बडसीकरी राजीव ,केडी अम्बेडकर, दीक्षा अम्बेडकर, विट्ठू करोडा आदि मौजूद रहे।

समाज की एकजुटता से ही समाज का उत्थान संभव : उदय भान

कहा : मीडिया लोकतन्त्र का चौथा स्तंभ, हमे बहुजन मीडिया को सशक्त करना पड़ेगा

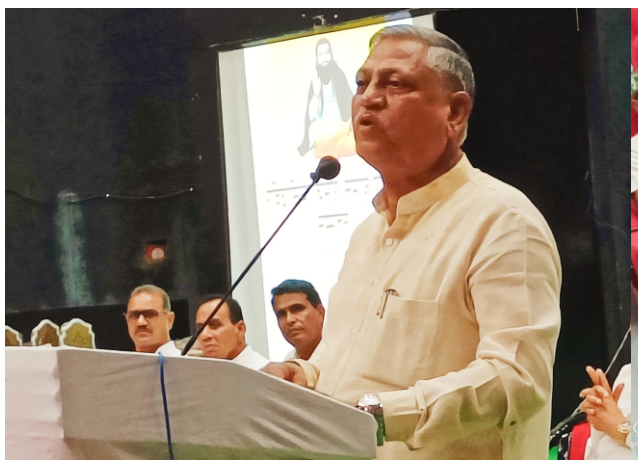

आज 11जुलाई 2023 को करनाल में रविदासिया (चमार) समाज का आयोजन डॉ जगबीर सिंह पूर्व सीएमओ की अगुवाई में हुआ जिसमे चौ उदय भान जी कॉंग्रेस अध्यक्ष हरियाणा मुख्य अतिथि थे और चौ लहरी सिंह पूर्व विधायक ने समारोह की अध्यक्षता की। समाज के सभी लोगों ने बढ़चढ़ कर हिसा लिया और प्रोग्राम को बहुत ही शानदार तरीके से सफल बनाया। मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देते डॉ जगबीर सिंह पूर्व सीएमओ ,प्रोफेसर, डॉ भावना दहिया कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, एडवोकेट श्री नरेश रँगा श्रीमती सरला चौधरी पूर्व प्रिंसिपल बीएड कॉलज, व अन्य प्रबुद्धजन करनाल।

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

करनाल, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष उदयभान ने कहा की उदय भान ने कहा कि कोई भी समाज तभी तरक्की करता है जब वह एकजुट रहता है। रविदासिया समाज एकता सम्मेलन इस कड़ी में एक अच्छा प्रयास है। वे मंगलवार को श्री मंगलसेन ऑडोटोरियम में सेवानिवृत सीएमओ डॉ.जगबीर सिंह द्वारा आयोजित रविदासिया समाज एकता सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा की हमें बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। युवाओं को रोजगार मिले, इसके लिए समाज को रणनीति तैयार करनी चाहिए। आज समाज के आर्थिक उत्थान के लिए बेहतर प्रयास करने की आवश्यकता है। राजनीति के क्षेत्र में भागीदारी बढ़ानी होगी

उन्होंने विस्तार पूर्वक अपनी बात रखते हुए कहा की हमें मीडिया की तरफ ध्यान देना पडेगा,व्यवसाय, साहित्य की तरफ ध्यान देना पडेगा। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है तो हमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया पर अच्छे से ध्यान देना पडेगा, तब समाज आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा की बाबा साहब ने सब को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। उन्होंने कहा था की शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो। आज शिक्षा के आधार क्या है ? सरकारी स्कूलों में सारे गरीब पीडित , शोषित, वंचित समाज के बच्चे पढ़ते हैं। वहां ना बैठने की व्यवस्था है ना लाइब्रेरी है, ना लेबोरेट्री है और ना ही अध्यापक। हमारी शिक्षण व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो गई है। जो हमारे गरीब समाज के खिलाफ षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। बिगड़ती शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए हम सबको संघर्ष करना पडेगा। हमें असमानता, शिक्षा और समान अधिकारों के लिए लड़ना पड़ेगा। उन्होंने कहा की देश के अंदर चाहे वो अमीर का बेटा हो या किसी गरीब का बेटा हो, एक जैसी शिक्षा हो। फिर देखें कौन ग्रामीण हैं ? हमारा मुकाबला तब करें। हमें समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए, हमें राजनीतिक दलों में दबाव बनाना पडेगा। अपने और पराये की पहचान करनी पडेगी। पार्टियों की दलित विरोधी मानसिकता की परख करनी होगी।

उन्होंने कहा की हमें विधानसभा,लोकसभा में ऐसे प्रतिनिधियों को चुनकर भेजना है जो समाज के अधिकारों के लिए लड सकें मजबूती के साथ अपनी बात को रख सकें। तभी समाज का उत्थान हो सकेगा। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि कांग्रेस के करनाल प्रभारी पूर्व विधायक लहरी सिंह ने कहा की जब देश आजाद हुआ तो इस देश में एक ऐसा बदलाव हुआ जब बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के संघर्ष से हमें सभी अधिकार मिले। आज वो अधिकार छीने जा रहे हैं। राजनैतिक,सामाजिक,धार्मिक तौर पर हमारा खात्मा किया जा रहा है। हमे एकजुट होकर लड़ाई लड़नी पड़ेगी तभी हमारे अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं।

सम्मेलन में सैंकड़ों की संख्या में पहुंचे गुरु रविदास सभाओं, डॉ अंबेडकर सभाओं और गुरु रविदास जी आश्रमों के संचालकों ने रविदासिया समाज की एकता पर बल दिया गया। राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक उत्थान पर अन्य बुद्धिजीवियों ने भी अपने विचार रखे। निजी कंपनियों की भर्ती में आरक्षण की मांग उठाई गई और समाज की आर्थिक आय को ऊंचा उठाने के लिए स्वयं सहायता समूह बैंक बनाने पर जोर देने को लेकर मंथन हुआ। डॉ भावना दहिया द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई जिसमे सभी रविदासिया समाज के अग्रणी रहे नेताओं के जीवन संघर्ष को दर्शाया गया।

इस अवसर पर सम्मेलन के संयोजक पूर्व सीएमओ डॉ जगबीर सिंह ने सम्मेलन में पहुंचे अतिथियों व सभी लोगों का आभार प्रकट किया। सफल आयोजन के लिए सबके सहयोग की सराहना की। इस मौके पर महात्मा सुरेंद्र दास, महात्मा दया दास,महात्मा गुलाब दास, रोहित जोशी, भारत भूषण, दया प्रकाश, सुरेंद्र, संजीव दास, प्रोफेसर भावना दहिया, एडवोकेट नरेश रंगा, कालीचरण मौजूद रहे।

जिन जरूरतमंद लोगों के बरसात में मकान गिर गए उनकी सरकार को मदद करनी चाहिए: संदीप गर्ग

समाजसेवी संदीप गर्ग ने गांव अटल नगर के जरूरतमंद परिवारों के पास भिजवाया खाना

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। स्टालवार्ट फाउंडेशन के चेयरमैन एवं समाजसेवी संदीप गर्ग की ओर से पिपली ब्लॉक के गांव अटल नगर के उन जरूरतमंद परिवारों के पास मंगलवार दोपहर का खाना भिजवाया गया। जिनके मकान पिछले तीन दिन की बरसात के कारण डूब गए थे और लोगों को खाना बनाने में परेशानी हो रही थी।

समाजसेवी संदीप गर्ग ने कहा कि पिछले तीन दिन में जो बरसात में कहर मचाया है उसे न केवल किसानों की भारी फसलों को तो भारी नुकसान हुआ है उसके साथ साथ जो झुग्गी-झोपड़ी व कच्चे मकानों में जरूरतमंद लोग रहते थे, उनको भी काफी नुकसान उठाना पड़ा है। सबसे पहले तो मौजूदा सरकार को ऐसे जरूरतमंद लोगों की मदद करनी चाहिए। जिससे कि वह अपने बरसात में गिरे मकानों को दोबारा से खड़ा कर सके और उनके पास उनका हाल चाल जानने जाना चाहिए। जब तक उनका कामकाज नहीं चलता तब तक उनके पेट भरने के लिए रोटी की व्यवस्था हो। इतना ही नहीं मंगलवार को फाउंडेशन की ओर से गांव अटल नगर के जरूरतमंद लोगों के लिए दोपहर का खाना भिजवाया गया।

वहीं अटल नगर के सरपंच दीपक कुमार ने कहा कि समाजसेवी संदीप गर्ग द्वारा गांव अटल नगर में एक शव वाहन उपलब्ध कराया हुआ है। उन्होंने जो मंगलवार को जरूरतमंद परिवारों के लोगों के लिए रोटी की व्यवस्था की है उसकी जितनी प्रशंसा

की जाए उतनी कम है।

इससे पता चलता है कि समाजसेवी संदीप गर्ग लाडवा हल्के की जनता के लिए चिंतित हैं। इस मौके पर मुकेश कुमार, जयप्रकाश, मदन, राहुल, विनोद, सचिन, आर्यन आदि मौजूद थे।

सरकारी सहायता प्राप्त प्राइवेट महाविद्यालयों में मिले अनुसूचित जाति के प्राध्यापकों को आरक्षण : लांगयान

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । डॉ रामभक्त लांगयान(आईएएस, सेवानिवृत) प्रधान एवं समस्त कार्यकारणी अंबेडकर भवन की ओर से हरियाणा के सभी अनुसूचित जाति के मंत्रियों व सांसदों से मांग पत्र के माध्यम से मांग की गई है। हरियाणा में लगभग 100 ऐसे कॉलेज हैं जो सरकार से 95 प्रतिशत सहायता प्राप्त करते हैं लेकिन कुछ कॉलेजों को छोड़कर किसी में भी अनुसूचित जाति का एक भी प्राध्यापक नहीं है। यहां विषय को यूनिट मानकर भर्ती की जाती है जबकि यूजीसी के नियमों के अनुसार कॉलेज को यूनिट मानकर भर्ती होनी चाहिए। मांग पत्र में कहा गया है की यूनिवर्सिटी में जो भर्तियां होती हैं उनमें यूनिवर्सिटी को यूनिट माना जाता है। इस प्रकार सरकारी सहायता प्राप्त प्राइवेट महाविद्यालयों में जहां 20 प्राध्यापक हैं, वहां प्राध्यापक अनुसूचित जाति के भी होने चाहिए।

डॉ रामभक्त लांगयान ने कहा कि 97 सरकारी सहायता प्राप्त प्राइवेट कॉलेजों में इस समय लगभग 2 हजार प्राध्यापक हैं लेकिन अनुसूचित जाति के प्राध्यापकों की संख्या 40 से ज्यादा नहीं है जबकि अनुसूचित जाति के प्राध्यापकों की संख्या 400 होनी चाहिए। उन्होंने बताया की हमने 6 माह पहले मुख्यमंत्री मनोहरलाल जी से इसकी मांग की थी। अब तक उसका कोई फैसला नहीं हुआ है। उन्होंने बताया की सभी मंत्रियों व सांसदों को लिखा है कि आप अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप माननीय मुख्यमंत्री से मिलकर प्राइवेट कॉलेजों में आरक्षण करवाएं ताकि हमारे पढ़े-लिखे युवकों को भी नौकरी मिल सके।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber : HAR/HIN /2018/77311